सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दिशा

राजभाषा पत्रिका

वर्ष : 2024

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची

पो.– डोरण्डा, राँची– 834002 (झारखण्ड)

दूरभाष :– 0651–2412942, 2412582 फैक्स : 0651–2411745

वेबसाइट : https://cag.gov.in/ae/jharkhand/en ई–मेल पता : rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in

‘दिशा’ परिवार

श्री राज कुमार अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

श्री अरूण मिंज
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री वी.पी. सुधीर
उप महालेखाकार (लेखा, कार्य एवं वन)

श्री सुभाष कुमार रजक
उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री अर्जुन चौधरी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रधान संपादक)

श्री सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी (संपादक)

श्री रमेश कुमार रौशन
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

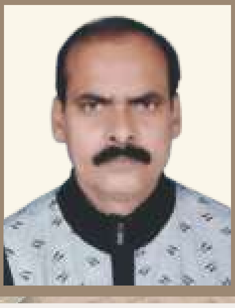

श्री अशोक सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

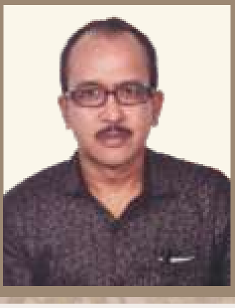

श्री उमेश कुमार ओझा
वरिष्ठ लेखाकार

श्रीमती शिप्रा शालिनी आईंद
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

सत्यमेव जयते

दिशा

राजभाषा पत्रिका

वर्ष : 2024

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची
पो.– डोरण्डा, राँची– 834002 (झारखण्ड)
दूरभाष :– 0651–2412942, 2412582 फैक्स :– 0651–2411745
वेबसाइट : https://cag.gov.in/ae/jharkhand/en
ई–मेल पता : rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in

'दिशा' परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री राज कुमार अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संरक्षक

श्री अरूण मिंज, वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)
श्री वी.पी. सुधीर, उप-महालेखाकार (लेखा, कार्य एवं वन)
श्री सुभाष कुमार रजक, उप-महालेखाकार (पेंशन)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री अर्जुन चौधरी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

श्री सुनील कुमार साव, हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग

श्रीमती शिप्रा शालिनी आईन्द, कनिष्ठ अनुवादक
श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

संपादक मंडल

श्री रमेश कुमार रौशन, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
श्री अशोक सिंह, सहायक लेखा अधिकारी
श्री उमेश कुमार ओझा, वरिष्ठ लेखाकार

अस्वीकरण

लेखकों/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं।
उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/संपादक/संपादक मंडल
का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रधान महालेखाकार का संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका "दिशा" अपना 25वां वर्ष पूर्ण कर अपने 26वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है। "दिशा" से हमारा तात्पर्य है– हमारी अनूठी भारतीयता के सभी विचारों एवं विभिन्न आयामों को समाविष्ट कर एक सही मार्गदर्शन एवं दिशा की ओर अपना कदम बढ़ाना।

विभिन्न भाषाएँ और संस्कृतियाँ भारत की पहचान है। अभिव्यक्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है और आत्म अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा से बेहतर और कोई माध्यम नहीं हो सकता है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हमारी मातृभाषा हिंदी ही हमारी राजभाषा है इसलिए हमारे लिए हिंदी में कार्यालयीन कार्य करना सहज और सरल है। भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया था। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है और अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार करना एवं उसका विकास करना संघ का संवैधानिक कर्तव्य है। संघ के अधिकारी–कर्मचारी होने के नाते हिंदी में कार्य करना तथा हिंदी का प्रसार–प्रचार करना हमारा भी कर्तव्य है।

हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि प्रस्तुत अंक में हमारे कार्यालय के कर्मियों एवं उनके परिवारजनों के विभिन्न विचारों एवं उदगारों को सारगर्भित कर परोसा गया है तथा रचनाकारों ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के साथ–साथ रचनात्मक प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करना इस पत्रिका का ध्येय रहा है।

"दिशा" के इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए मैं, संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े कार्यालय के कर्मियों द्वारा किये गये श्रम–साध्य प्रयासों की सराहना करता हूँ तथा शुभकामनाएं देता हूँ। मैं पुनः पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई भी देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि हमारी गृह पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे।

(राज कुमार अग्रवाल)
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं उत्थान के लिए पत्रिका का प्रकाशन एक सशक्त माध्यम है। इसी क्रम में इस कार्यालय की गृह पत्रिका "दिशा" पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

हमारा प्रयत्न है कि कार्यालय के कर्मी राजभाषा हिंदी का प्रयोग अपने कार्यालय के दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक करें जिससे राजभाषा के प्रसार–प्रचार में अधिकाधिक सहयोग पहुँचाने में सार्थक सिद्ध हो सके।

रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ।

हमारा प्रयास कितना सफल हो पाया इसके लिए आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी ।

शुभकामनाओं सहित ....

(अर्जुन चौधरी)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादकीय

आपकी अपनी वार्षिक पत्रिका 'दिशा' का यह अंक आपको सौंपते हुए एक सुखद अनुभूति का अनुभव हो रहा है। विविध रंग बिरंगे मौक्तिक माला में पिरोई यह पत्रिका अद्भुत और अपने नए कलेवर व परिवेश में प्रस्तुत है। यह सब आपके अतुलनीय सहयोग से ही संभव हो सका है।

मानव का अपना एक व्यक्तित्व होता है। इस व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करने का सर्वोत्तम साधन भाषा है। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति समाज का सार्थक सदस्य बनता है। राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण का निर्माण राष्ट्रभाषा के द्वारा ही होता है। राष्ट्र का भाषा से वही सम्बन्ध है जो शरीर का आत्मा से। राष्ट्र एवं राष्ट्रीय एकता दोनों के लिए लोगों में जीवन हितों एवं आदर्शों की एकता का होना आवश्यक होता है। इस एकता की उत्पत्ति तब तक संभव नहीं होती जब तक एक दूसरे को समझने के लिए भाषा का एक समान माध्यम न हो। भाषा के द्वारा ही लोगों में वैचारिक तथा आत्मिक एकता की स्थापना हो पाती है। अतः राजभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता एवं अंखडता का एक प्रमुख साधन है।

कार्यालय की ओर से मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बहुमूल्य सुझावों एवं सहयोग से पत्रिका को मूर्त रूप दिया जा सका। भविष्य में भी उनसे ऐसे ही सहयोग की अपेक्षा रहेगी। पत्रिका की निरन्तरता बनाये रखने हेतु सभी विद्वतजनों के सुझाव एवं मार्गदर्शन की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(सुनील कुमार साव)
हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/स्वानुभूति/जीवन दर्शन/कहानी/अनुवाद	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	हिंदी शिक्षण की चुनौतियां	सुनील कुमार साव	07-10
2.	प्रार्थना और हम	शिप्रा शालिनी आईन्द	11-12
3.	बाबू ! नौकरी मिलेगी.....	अमित कुमार पुष्पम	13-15
4.	जगदलपुर की यात्रा	असाई माई पाड़ेया	16-18
5.	अग्निवीर योजना	मन्नु कुमार सिंह	19
6.	एक सच्ची घटना मेरे गांव की	वृज नंदन कुमार	20-21
7.	दोस्ती का जादुई सफर	वैभव नंदन डांगिल	22-24
8.	मौन की महिमा	कुन्दन कुमार	25
9.	अमिता	ब्यूटी कुमारी	26-27
10.	सपने	प्रदीप कुमार	28
11.	एस.एस.सी.	पुरुषोत्तम दास	29-30
12.	वामिस	पुरुषोत्तम दास	31-33
13.	जिंदगी की नई शुरुआत	कृष्ण लाल	34-35
14.	सोशल मीडिया	प्रतीक जैन	36-37
15.	मित्रता	संजीव कुमार	38-39
16.	सकारात्मक सोच और हम	शिप्रा शालिनी आईन्द	40-41
17.	रिपोर्ट कार्ड	अमित कुमार	42-43
18.	मेजर डी. पी. सिंह - भारत के पहले ब्लेड रनर	अमित कुमार	44-45
19.	विश्व पर जैविक आंतक का खतरा	उमेश कुमार ओझा	46
	कविता/गीत/व्यंग्य		
20.	रख मुट्ठी में वक्त को	सुनील कुमार साव	47
21.	किसान आंदोलन	गीतांजलि कुमारी	48
22.	पर्यावरण एवं मानव	गीतांजलि कुमारी	49
23.	सड़क दुर्घटना	कुंदन कुमार	50
24.	विजयादशमी	प्रदीप कुमार	50
25.	मंजिल बस दो कदम	प्रदीप कुमार	51
26.	गिर जाना मेरा अंत नहीं	संतोष कुमार राय	51
27.	गृहिणी	अमित कुमार	52
28.	इंतजार	मन्नु कुमार सिंह	53
29.	बातें	कृष्ण लाल	54
30.	जीवन	प्रखर जैन	55
31.	मुझे फिर से जीना है।	संजीव कुमार	55
32.	भ्रष्ट्राचार	जगर नाथ सन्डील	56
33.	जोक्स	संतोष कुमार राय	57
	बाल रचनाकार		
34.	पेड़ हमारे साथी हैं	सुहासिनी	58
35.	नानी की कहानी	सुहासिनी	58
36.	असत्य की गूंज	आयुष कुमार	58
37.	माइंड टीजर्स	श्री ओम	59

हिंदी शिक्षण की चुनौतियां

सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

डिजिटल क्रांति के वर्तमान दौर में अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पैनिश, चीनी समेत विश्व की कई भाषाएं ऑनलाइन शिक्षण या इंटरनेट का उपयोग करते हुए बहुत–ही तीव्र गति से विस्तार पा रही हैं। ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से ये भाषाएं आज दुनियाभर में बड़ी संख्या में सीखी और सिखाई जा रही है क्योंकि इंटरनेट पर इन भाषाओं को सिखाने वाली वेबसाइट्स, टुल्स या एप्लीकेशन्स (एप्स) बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। आज के दौर में यह बात पूरे विश्वास के साथ कहीं जा सकती है कि जिन भाषाओं की सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है, उन भाषाओं को सीखने वालों की संख्या भी उतनी ही कम होगी। दूसरे शब्दों में जो भाषाएं ऑनलाइन क्षेत्र में पिछड़ जाएंगी, निश्चित है कि उसका भविष्य भी सुरक्षित नहीं रहेगा। यह बात भाषा शिक्षण के संदर्भ में भी लागू होती है। हिंदी के संदर्भ में यह एक सुखद विषय है कि इंटरनेट के क्षेत्र में देरी से दस्तक देने के बावजूद इंटरनेट पर हिंदी भाषा का प्रसार अच्छी गति से हो रहा है किंतु विश्व की चौथी बड़ी भाषा हिंदी की लोकप्रियता और इसके क्षेत्र–विस्तार को देखते हुए कहा जा सकता है कि यह उपलब्धि पर्याप्त नहीं है। इंटरनेट पर हिंदी भाषा को विस्तार देने और उसके भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए दो महत्वपूर्ण पहलुओं पर कार्य किए जाने की बड़ी आवश्यकता है। पहला अन्य भाषा के रूप में हिंदी सीखने वाले अलग–अलग स्तर के विद्यार्थियों के लिए उनकी आवश्यकता एवं उद्देश्य के अनुरूप शिक्षण–सामग्री तैयार कराना और दूसरा गैर–हिंदी भाषियों के लिए हिंदी सीखने के साधनों को सर्वसुलभ बनाना। इसमें पहले का संबंध भाषा से है तो दूसरे का टेक्नोलॉजी से। प्रस्तुत आलेख में गैर हिंदी भाषियों के ऑनलाइन शिक्षण की कुछ ऐसी चुनौतियों पर विचार करने का प्रयास किया गया है।

गैर–हिंदी भाषियों के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि –

प्रायः तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, आदि भाषा–भाषियों को अर्थात् राजभाषा नियम 1976 में उल्लिखित 'ग' क्षेत्र के लोगों को हिंदीत्तर भाषी या गैर–हिंदी भाषी कहा जाता था। किंतु आजकल हिंदी के कुछ विद्वान् भी, जो अपने घर–परिवार में हिंदी बोलियों को यानी अवधि, मैथिली, भोजपुरी आदि को मातृभाषावत् प्रयोग करते हैं, स्वयं को गैर हिंदी भाषी कह रहे हैं। वर्तमान समय में भोजपुरी को आठवीं अनुसूची शामिल किए जाने की मांग को लेकर चलाए जा रहे आंदोलन से सभी परिचित हैं। ऐसे में भाषा शिक्षण की दृष्टि से यह सवाल उठता है कि जिनकी मातृभाषा हिंदी की बोलियां यानी मैथिली, अवधी, भोजपुरी आदि है, उन्हें हिंदी भाषा जिस रूप में सिखाई जाती है (या उनके हिंदी के पाठों का जो स्तर होगा) क्या उसी रूप में तमिल, तेलुगू, उड़िया आदि भाषाओं को भी सिखाई जाए? क्योंकि भाषा वैज्ञानिक मानते हैं कि द्रविड़ भाषाओं की प्रकृति हिंदी या हिंदी की बोलियों से बहुत भिन्न होती है। इन्हें हिंदी भाषा का वह सामान्य ज्ञान भी नहीं होता है, जो हिंदी बोलियों को मातृभाषावत् प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के पास होता है। इतना ही नहीं, द्रविड़ भाषा–परिवार के लोगों को आरंभ में सामाजिक स्तर पर भी हिंदी सीखने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। इनके लिए हिंदी भाषा अन्य भाषा या लगभग विदेशी भाषा–सी होती है। क्योंकि इन प्रांतों की अधिकतर विद्यार्थी प्रथम भाषा के रूप में तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम आदि अपने–अपने क्षेत्र की भाषाएं पढ़ते हैं, द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत और तृतीय भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ते हैं। इन्हें अपने जीवन में हिंदी सीखने की जरूरत एक समय के बाद महसूस होती है। हिंदी–क्षेत्र की जनता के साथ ऐसी बात नहीं है। इस दृष्टि से भाषा शिक्षण की प्रणाली इन दोनों समुदायों के लिए अलग हो जाती है क्योंकि इनकी आवश्यकता प्रयोजन और अभिप्रेरणा के कारण अलग–अलग हो जाती है। (अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्ण कुमार गोस्वामी, पृ. 396)

हिंदी भाषा की पढ़ाई प्रायः दो रूपों में होती है 1. प्रथम भाषा शिक्षण के रूप में और 2. अन्य भाषा शिक्षण के रूप में। अन्य भाषा शिक्षण के अंतर्गत भी हिंदी की पढ़ाई दो प्रकार से होती है – (क) द्वितीय भाषा के रूप में और (ख)

विदेशी भाषा के रूप में। जब विद्यार्थी को अन्य भाषा के रूप में हिंदी भाषा सिखाई जाती है तो शिक्षक का लक्ष्य रहता है कि विद्यार्थी में भाषा संबंधित चारों कौशलों दृ श्रवण, पाठन, लेखन और भाषण का विकास हो। जबकि प्रथम भाषा शिक्षण में केवल दो प्रकार के कौशलों—पाठन और लेखन के विकास पर ही अधिक बल दिया जाता है। इसीलिए दोनों समुदायों की शिक्षण पद्धतियां अलग अलग हो जाती हैं।

हिंदी शिक्षण की प्रचलित पद्धतियां :

जब से भाषा—शिक्षण को वैज्ञानिक आधार मिला है तब से ही भाषा शिक्षण को भाषा—विज्ञान, मनोविज्ञान व्यक्तिरेकी विश्लेषण, त्रुटि विश्लेषण, अनुवाद आदि विभिन्न विषय क्षेत्रों के साथ जोड़कर देखा जाने लगा हैं। जिसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का विकास भी हुआ है। सुविचार भाषा शिक्षण शास्त्री मैंके ने पंद्रह विधियों का उल्लेख किया हैः

1. प्रत्यक्ष विधि (Direct Method)
2. स्वाभाविक विधि (Natural Method)
3. मनोवैज्ञानिक विधि (Psychological Method)
4. ध्वनि वैज्ञानिक विधि (Phonological Method)
5. वाचक विधि (Reading Method)
6. व्याकरण विधि (Grammar Method)
7. संकलन विधि (Electric Method)
8. इकाई विधि (Unit Method)
9. भाषा नियंत्रण विधि (Language Control Method)
10. अनुकरण आत्मक विधि (Mimicry & memorization Method)
11. अभ्यास सिद्धांत विधि (Practice Theory Method)
12. सजातीय विधि (Cognate Method)
13. द्विभाषीय विधि (Dual Language Method)
14. व्याकरण अनुवाद विधि (Grammar Translation Method)
15. अनुवाद विधि (Translation Method)

इसके अतिरिक्त भाषा शिक्षण में कुछ और विधियों की चर्चा भी मिलती है जैसे स्व—अधिगम विधि (Self –access Method), श्रव्य भाषिक विधि (Audio lingual method) आदि। लेकिन आजकल भाषा शिक्षण के संदर्भ में जो शिक्षण पद्धति सबसे अधिक लोकप्रिय हो रही है, वह हैं कॉल पद्धति। (CALL- Cumputer Aided Language Learning method)

ऑनलाइन या इंटरनेट आधारित भाषा शिक्षण विधि भी इसी का एक हिस्सा है। संप्रति अन्य भाषा शिक्षण की दृष्टि से यह एक उत्तम विधि मानी जा रही है। क्योंकि अन्य भाषा की शिक्षा विद्यार्थी को उसकी अपनी भाषा मातृभाषा सीखने के बाद दी जाती है। इस अवस्था में विद्यार्थी नई भाषा के शब्दों, अभिव्यक्तियों को विभिन्न तकनीकों से बार—बार दोहरा कर सीखने की चेष्टा करता है। वेन स्टेट के प्रख्यात न्यूरोलॉजिस्ट हैरोल्ड चुगानी लिखते हैं कि (Stimulation repetition and novelty were are essential in building the neurological foundation in the brain for later learning- Without enough stimulation, repetition and novelty, brain synapses remain unused and eventually are shed)

अभिप्राय यह है कि एक आयु के बाद विद्यार्थी जब एक नई भाषा सीखने का प्रयास करता है तो वह प्रोत्साहन,

पुनरावृति और नवीनता के माध्यम से नई भाषा पर अधिकार प्राप्त कर पाता है। कॉल विधि– ऑनलाइन भाषा शिक्षण एक ऐसी उत्तम विधि है जिसमें उत्प्रेरण, दोहराव और नवीनता की पर्याप्त सुविधा रहती है और इसकी सहायता से गैर हिंदी भाषी विद्यार्थी बहुत ही सरलता से हिंदी सीख सकते हैं। भारत के कई क्षेत्रों में गैर हिंदी भाषियों को हिंदी भाषा का सहज वातावरण नहीं मिलता है। जिस कारण कभी–कभी उनके पास हिंदी भाषा की वह बुनियादी जानकारी भी नहीं होती है जो हिंदी भाषी क्षेत्र के विद्यार्थी के पास होती है। परिणामस्वरूप वह उच्चारण, लेखन, व्याकरण संबंधी कई प्रकार की त्रुटियां कर सकता है, जिससे कभी–कभी अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है, ऐसी स्थिति में शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों द्वारा की जा रही या की जाने वाली भाषिक त्रुटियों को पहचानें और उन्हें सुधारें। किंतु अक्सरयह देखा जाता है कि गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी सिखाने वाले शिक्षक भी (जो अपनी क्षेत्रीय भाषा के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाते हैं) कभी–कभी शुद्ध एवं मानक उच्चारण और लेखन रूप परिचित नहीं हो पाते हैं। ऐसे में वे अपनी समझ–बूझ के अनुरूप विद्यार्थी को कभी–कभी अमानक उच्चारणया लेखन रूप ही सिखाते हैं। हिंदी सीखने एवं सिखाने की प्रारंभिक अवस्था में गैर हिंदी भाषी विद्यार्थियों द्वारा प्रायः निम्न प्रकार की अशुद्धियां अधिक हो जाती है :–

1. उच्चारण संबंधी अशुद्धियां
2. वर्तनीगत त्रुटियां
3. व्याकरण संबंधी त्रुटियां
4. वाक्य रचना संबंधी त्रुटियां
5. भाषाई अव्यवस्था

वर्तमान में इंटरनेट पर ऐसी कई वेबसाइट्स, टूल्स, एप्लीकेशन्स उपलब्ध है, जो उपर्युक्त सभी प्रकार अशुद्धियों को दूर करने में गैर–हिंदी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए सहायक हो सकती है। इन टूल्स की सहायता से विद्यार्थी बहुत सरल प्रयासों से अपने भाषायी कौशल का विकास कर सकते हैं। ये टूल्स विद्यार्थियों को न केवल अपने अभ्यास पाठों की पुनरावृति कर अपने उच्चारण को सुधारने का पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं बल्कि उनके भाषा सीखने के प्रयास को मजेदार भी बना देते हैं।

ऑनलाइन हिंदी शिक्षण की चुनौतिया :

आमतौर पर ऑनलाइन हिंदी भाषा शिक्षण में विद्यार्थियों को तीन प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

1. तकनीकी दृष्टि से समस्याएं :अर्थात इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा ना होना या इंटरनेट कनेक्शन के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाएं (बिजली, वाई–फाई कनेक्टिविटी या टेलीफोन आदि) उपलब्ध ना होना।
2. प्रशासनिक दृष्टि से समस्याएंः अर्थात भाषा के विद्यार्थियों/शिक्षकों को इंटरनेट एवं कंप्यूटर की बुनियादी जानकारी ना होना।
3. भाषिक सामग्री दृष्टि से समस्याएंः इंटरनेट पर उपलब्ध पाठ सामग्री विद्यार्थियों के उपयुक्त ना होना, सामग्री का स्तर बहुत ऊंचा यह रुचिकर एवं दुरूह होना आदि ।

इसके अतिरिक्त शिक्षकों की दृष्टि से ऑनलाइन शिक्षण की कुछ अन्य प्रकार की समस्याएं भी होती है उदाहरण के लिए सूची ऑनलाइन शिक्षण 24X7 उपलब्ध रहता है, ऐसे में विद्यार्थी के पास क्या विकल्प हमेशा खुला रहता है कि वह अपनी सुविधानुसार कभी भी, कहीं भी बैठकर पढ़ सकता है। जब विद्यार्थी का मन पढ़ने में नहीं लगता है या पाक की प्रस्तुति उसे अरुचिकर लगती है तो वह पढ़ने के लिए बाध्य नहीं रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऑनलाइन शिक्षण की विधि शिक्षक केंद्रित नहीं होती, बल्कि यह पूरी तरह से विद्यार्थी केंद्रित होती है। ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक का विद्यार्थी पर क्लासरूम टीचिंग की भांति नियंत्रण नहीं होता है। यह विद्यार्थी अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र होता है। इसीलिए यहां शिक्षक को अपनी प्रस्तुति अधिक आकर्षक,विचारोत्तेजक, विषय केंद्रित और विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता के अनुकूल तैयार करने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में ऑनलाइन शिक्षण के विशेषज्ञ स्टीफन मर्गाट्रॉड के विचार उल्लेखनीय हैं, वे बताते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण में पाठ तैयार करते समय

शिक्षक को निम्न पांच बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिएः–

1. विद्यार्थी की सक्रियता
2. विभिन्न प्रकार के निदेशों का उपयोग
3. विद्यार्थियों के अभ्यास कार्य की मात्रा
4. विद्यार्थियों से प्राप्त होने वाले फीडबैक की गुणवत्ता
5. विद्यार्थियों की प्रतिभागिता का मूल्यांकन
6. इंटरनेट पर हिंदी शिक्षण का स्थान

जहां तक इंटरनेट ऑनलाइन के माध्यम से हिंदी शिक्षण की बात है, हम भले ही यह कह लें कि इंटरनेट पर हिंदी तीव्र गति से प्रगति कर रही है, इंटरनेट पर हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि दुनिया भर में बड़ी तादात में सीखी जा रही है आदि, पर हम इस बात से भी इंकार नहीं कर सकते हैं कि अन्य प्रमुख भाषाओं की तुलना में ऑनलाइन हिंदी सीखने की वेबसाइट्स और टूल्स अभी भी बहुत कम है। इसकी बानगी यह है कि विश्व प्रसिद्ध भाषाओं की वेबसाइट (http%//www-bbc-co-uk-languages) पर विश्व की प्रमुख 40 भाषाओं को सीखने और सिखाने के बाद उपलब्ध हैं, पर इस सूची में हिंदी नहीं है । यानी अन्य भाषा के रूप में हिंदी सिखाने के लिए बड़ी मात्रा में सामग्री तैयार करना अब भी हमारी पहली और सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई हैं।

इस संदर्भ में हमारी दूसरी चुनौती है– विदेशियों के लिए ही नहीं, भारत के,हिंदीत्तरभाषियों के लिए भी हिंदी सीखने की एप्लीकेशन सीमित है। कहने का तात्पर्य है कि यदि कोई तमिल, तेलुगू या उड़िया भाषी इंटरनेट के माध्यम से हिंदी सीखना चाहता है तो उसके लिए बहुत कम ही टुल्स उपलब्ध है यानी तमिल माध्यम से हिंदी तेलुगु माध्यम से हिंदी पुरिया माध्यम से हिंदी सीखने की वेबसाइट एप्लीकेशन जैसे कि ऑनलाइन शब्दकोश को भी बहुत आवश्यकता है।

तीसरी चुनौतियां हैं ऑनलाइन पर हिंदी में ऑडियो की बहुत कमी है क्योंकि ऑडियो पुस्तकों की अपनी अलग सुविधा है यह दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी होती है इतना ही नहीं इससे सामान्य विद्यार्थी न केवल मानक भाषा उच्चारण जान पाएंगे बल्कि वाचन कौशल की विधि भी सीख सकते हैं।

चौथी चुनौती है मानक हिंदी व्याकरण प्रशिक्षण की वेबसाइट कम होना हमें इंटरनेट पर अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए ऐसे कई वेबसाइट या वीडियोस मिल जाते हैं पर हिंदी में इसकी भारी कमी है यदि गैर हिंदी भाषियों को ध्यान में रखकर हिंदी व्याकरण प्रशिक्षण के पाठ इंटरनेट पर उपलब्ध कराए जाएं तो यह देश–विदेश के अनेक गैर हिंदी भाषियों के लिए काफी उपयोगी हो सकते हैं उदाहरण के लिए एक सामान्य तेलुगु भारती के हिंदी भाषा के व्याकरण में लिंग वचन एवं कारण चिन्हों संबंधी कई त्रुटियां पाई जा सकती है रोटियों के समाधान उपलब्ध कराए जाएं तो वह बहुत ही उपयोगी होगा।

इसके अतिरिक्त हिंदी में ई बुक को समृद्धि करना और गूगल ट्रांसलेट उसका अधिकारिक उपयोग कर उन्हें प्रोत्साहित करने की भी आवश्यकता है क्योंकि हिंदी शिक्षण संबंधी ऑनलाइन सुविधाओं का जितना अधिक उपयोग होगा इंटरनेट पर हिंदी की स्थिति उतनी ही मजबूत होगी।

प्रार्थना और हम

शिप्रा शालिनी आईन्द
कनिष्ठ अनुवादक

प्रार्थना (विनती, आराधना, पूजा, वंदना, उपासना, स्तुति) किसी न किसी रूप से चिंतन और कृतज्ञता का एक पल प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में प्रचुरता को स्वीकार और सराह सकता है। प्रार्थना के जरिए कृतज्ञता का अभ्यास करके, व्यक्ति में जागरूकता की भावना विकसित होती है, वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित होता है और जीवन के सरल सुखों में आनंद मिलता है।

प्रार्थना हमारे जीवन का एक शक्तिशाली और आवश्यक पहलू है। यह उच्च शक्ति के साथ संचार का एक साधन है, चाहे वह ईश्वर हो, ब्रह्मांड हो या हमारे अस्तित्व को नियंत्रित करने वाली दिव्य ऊर्जा हो। किसी की धार्मिक या आध्यात्मिक मान्यताओं के बावजूद, प्रार्थना हमारे दैनिक जीवन में उल्लेखनीय लाभ और महत्व रखती है।

सबसे पहले, प्रार्थना संकट के समय में आराम और सांत्वना के स्रोत के रूप में कार्य करती है। जीवन उतार–चढ़ाव से भरा है, और हम सभी विभिन्न बिंदुओं पर चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करते हैं। इन क्षणों के दौरान, प्रार्थना हमें आंतरिक शांति, शक्ति और मार्गदर्शन पाने में मदद करती है। यह हमें अपनी चिंताओं और भय को खुद से बड़ी ताकत के सामने व्यक्त करने की अनुमति देता है, जिससे राहत और आश्वासन की भावना मिलती है। प्रार्थना एक शरण के रूप में कार्य करती है, जो हमारी भावनाओं को बाहर निकालने और आराम पाने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करती है। यह जानना कि कोई व्यक्ति या चीज हमारी गहरी चिंताओं को सुन रही है, हमारे भीतर आशा और आशावाद पैदा करती है, जिससे हम सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीवन की परीक्षाओं का सामना कर पाते हैं। इसके अलावा, प्रार्थना आत्म–प्रतिबिंब और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देती है। हमारी भागदौड़ भरी जिंदगी में, लगातार भागदौड़ में फंसना और अपने भीतर के आत्म से संपर्क खोना आसान है। प्रार्थना आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करती है, जिससे हम अपने विचारों, भावनाओं और इच्छाओं से जुड़ पाते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी की अराजकता से एक पल पीछे हटकर, हम अपने कार्यों और इरादों का मूल्यांकन करते हुए स्पष्टता और दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं। यह आत्म–जागरूकता और आत्मनिरीक्षण व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है, जिससे हम अपने जीवन में उन क्षेत्रों की पहचान कर पाते हैं जिनमें सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रार्थना के माध्यम से, हम नैतिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से बेहतर व्यक्ति बनने के लिए मार्गदर्शन और शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, प्रार्थना कृतज्ञता और प्रशंसा की भावना पैदा करती है। अक्सर, हमारा जीवन इच्छाओं, लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं के इर्द–गिर्द घूमता है, और हम जो हमारे पास है उस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय जो हमारे पास नहीं है, उसमें खो सकते हैं। हालाँकि, प्रार्थना हमारे दृष्टिकोण को बदल देती है, हमें हमारे आस–पास मौजूद आशीर्वाद और चमत्कारों की याद दिलाती है। जीवन की सबसे सरल चीजों, जैसे कि अच्छे स्वास्थ्य, प्रियजनों या एक सुंदर सूर्यास्त के लिए कृतज्ञता व्यक्त करके, हम अपने भीतर और आसपास मौजूद प्रचुरता के बारे में अधिक जागरूक हो जाते हैं। कृतज्ञता सकारात्मक मानसिकता को प्रोत्साहित करती है, हमारे जीवन में संतोष और पूर्णता का पोषण करती है।

पांच उँगलियों की प्रार्थना यह प्रार्थना करने का एक सरल तरीका है जो हमे प्रार्थना करने के लिए चीजों को अलग–अलग मदद करने में मदद करती है जिस प्रकार हम प्रार्थना करने समय अपने दोनों हाथों को जोड़ते है (हस्त मुद्रा अंजलि) जैसे हमारे हृदय के निकट रख कर प्रार्थना करते है, प्रार्थना करते समय जब हम दोनों हाथों को जोड़ कर हृदय के निकट है अर्थात दिल से दुआ या प्रार्थना करते हैं।

अंगूठा :

अंगूठा हमारे हृदय से बिल्कुल निकट सटा हुआ अंगुली अंगूठा होता है। अंगूठा हमारे निकटम लोगों का प्रतीक है उन लोगों के लिए प्रार्थना करके शुरुआत करे जो आपसे सबसे करीबी है, जैसे आपका परिवार, दोस्त इत्यादि। यह उंगली उन लोगों के लिये प्रार्थना करती है जो हमें परमेश्वर से मार्गदर्शन मांगे की आप उनके सिद्धांतों को लागू कर सके एवं आपसी करवाहट, क्रोध, कलह, निंदा, बैर भाव दूर हो और एक दूसरे को प्रेम और क्षमा कर सके।

तर्जनी उंगली :

तर्जनी उंगली हाथ की दूसरी उंगली होती है जो ऊपर की ओर इशारा करती है यह उन लोगों के लिए आपकी प्रार्थना का प्रतीक है जो विभिन्न उच्च पदों पर आसीन है जैसे गुरु, सलाहकार और आपके वरीय अधिकारीगण जो आपकी अगुवाई करते आ रहे हैं इत्यादि।

मध्यमा उंगली :

मध्यमा उंगली सबसे ऊँची उंगली होती है जो आपको प्रभावशाली और शक्तिशाली पदों पर बैठे लोगों जैसे सरकार, प्रशासनिक अधिकारी, व्यापारी वर्ग, प्रबंधकों अपने उच्च अधिकारियों के लिए प्रार्थना करने की याद दिलाती है। अपनी जिम्मेदारियों में परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करना सिखलाती है।

अनामिका उंगली :

अनामिका सबसे कमजोर उंगली होती है जो उनलोगों के लिए आपकी प्रार्थना का प्रतीक है जो कमजोर, गरीब, बीमार, छोटे बच्चे, अनाथ, बेघर, बेसहारा, जरूरतमंद है। इनमें बीमार, गरीब पीड़ित और चुनौतियों का सामना करने वाले लोग शामिल हैं। उनके आराम, उपचार और सुविधा के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए ताकि वे हर तकलीफ समस्याओं और शत्रुओं के चंगुल से दूर रहें।

कनिष्ठ उंगली :

यह सबसे छोटी उंगली होती है जो हमारे खुद का प्रतीक होती है अंत में हम खुद के लिए प्रार्थना करे कनिष्ठ उंगली अपनी आवश्यकताओं, चिंताओं ,समस्यायों और इच्छाओं के लिए प्रार्थना करने के लिए इस उंगली का उपयोग करना चाहिए। अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की प्रार्थना के लिए कनिष्ठ अंगुली का अहम् योगदान है।

पांच उँगलियों वाली प्रार्थना एक सरल माध्यम है जो आपकी प्रार्थनाओं को मार्गदर्शित करने और विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित रखने में मदद करती है। यह कोई सख्त नियम नहीं है बल्कि आप इसे अपनी जरूरतों और प्राथमिकता के अनुसार ढाल सकते हैं। अपनी आराधनाओं को इन श्रेणियों में वर्गीकृत करे और प्रत्येक पहलुओं पर विचार करने के लिए समय निकल पाएंगे।

पांच उँगलियों वाली विनती एक संतुलित और समग्र विचारो को प्रोत्साहित करती है जो व्यक्तिगत चिंताओं और आपके चारो ओर की दुनिया की जरूरतों पर ध्यान केन्द्रित करती है ।

प्रार्थना हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो कई लाभ प्रदान करता है। यह आराम और सांत्वना प्रदान करता है, आत्म–प्रतिबिंब और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है, कृतज्ञता विकसित करता है, और एकता और परस्पर जुड़ाव को बढ़ावा देती है। किसी की आस्था चाहे जो भी हो, प्रार्थना जीवन की चुनौतियों से निपटने, आंतरिक शांति पाने और उच्च शक्ति से जुड़ने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है। प्रार्थना को अपने दैनिक दिनचर्या में शामिल करके, हम अपने समग्र कल्याण को बढ़ा सकते हैं और आध्यात्मिक रूप से अधिक संतुष्ट जीवन जी सकते हैं।

> "**हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है**
>
> - राहुल सांस्कृत्यायन"

बाबू! नौकरी मिलेगी...

अमित कुमार पुष्पम
द्वारा– अमित कुमार, क.अ.

अशोक सिनेमा की ओर से पटना जंक्शन आने पर ऑटो वाला कुछ पहले ही आपको उतार देता है। वहां से महावीर मंदिर आने के लिए कुछ ही महीनों पहले एक नया रास्ता बनाया गया है। जो स्मार्ट ऑटो स्टैंड के ग्राउंड फ्लोर होते हुए निकलता है। उसी रास्ते में लगभग पचास वर्ष की अवस्थावाली एक बूढ़ी औरत भीख मांग रही थी और भीख मांगते हुए किसी भी देवी–देवता का नाम नहीं ले रही थी। और न ही कोई गीत गा रही थी। बस, बेरोजगारी से उत्पन्न दुखद भावात्मक पीड़ा का नब्ज पकड़ते हुए हाथ फैलाती थी और कहती थी– बाबू! नौकरी मिलेगी।

विचारणीय बात ये है कि वो औरत एक मनोवैज्ञानिक है। उसने जनता के मनोविज्ञान को समझा है। समाज में व्याप्त मूलभूत समस्या को चिन्हित किया है। उसको पता है कि युवाओं को क्या चाहिए? और भिखारियों में वो युवाओं की विशेषज्ञ है। वो सिर्फ युवाओं को ही टारगेट करती है।

मैं उसको हीन दृष्टि से देखते हुए बोला–भीख क्यों मांगती हो माई?

वो बोली – याचक कौन नहीं है बाबू?

(उसके इस बात में कितना गहरा दर्शन छुपा हुआ है। वास्तव में याचक तो सब है। फिर मुझे अपनी दीनता का ज्ञान हुआ।)

मैं बोला – "बाल – बच्चा नहीं है माई?"

वो बोली – बाल – बच्चा किस माता – पिता का होता है जो मेरा होगा?

(इससे मुझे अपने श्रवण कुमार होने का गलतफहमी मिट गया)

अच्छा! वो एक दैवीय सम्पदा वाली व्यक्ति है। कहती है – भीख भगवान मंगा रहे हैं।

(अर्थात, कर्ता का कर्तापन से त्याग। जो की सुखी रहने का मूल मंत्र है।)

मैंने उजले रूमाल से अपना मुंह पोछते हुए बोला–आप नहाती नहीं हैंय कितना गंदा साड़ी है? बीमारी हो जाएगा न!

वो मुस्कुराती हुई बोली–मन मैला होने से अच्छा है कि तन ही मैला रहे। है न बाबू!

मैं पूछा – आप रहती कहां हैं?

वो मुस्कुराती हुए बोली – मैं तो इस पंचतत्व निर्मित नाशवान शरीर में रहती हूं। तुम कहां रहते हो बाबू?

मैं बोला–आप कहां तक पढ़ी – लिखी हैं?

वो बोली–मैं कभी स्कूल नहीं गई। इसलिए मेरे पास तुहारे जैसा कोई कागज का टुकड़ा नहीं है जो ये प्रमाण देता हो कि मैं पढ़ी – लिखी हूं।

मैं झल्लाते हुए बोला – इतना ही ज्ञानी हो तो भगवान को ढूंढते। इस पटना जक्शन पर मुझ जैसे युवाओं के आगे झुककर किसको ढूंढती हो?

वो मुस्कुराते हुए बोली–अपनी जवानी ढूंढ रही हूं बाबू!

मैं उनसे प्रभावित हो गया। मैं उनके पास रूमाल बिछाकर बैठ गया। और उनमें अभिरुचि लेते हुए बोला–देखो माई! मैं अभी ड्रीम इलेवन पर टीम बनाता हूं। तुम मुझे आशीर्वाद दो। अगर मैं जीत गया तो पचास लाख तुमको दे दूंगा। फिर तुमको कभी भीख नहीं मांगनी पड़ेगी। अच्छा, सोचो। तुम इतने पैसे का क्या–क्या करोगी?

वो पटना महावीर मंदिर की ओर तर्जनी दिखाते हुए निश्छल भाव में बोली – मैं उन पैसों से महावीर मंदिर से भी बड़ा मंदिर बनवाऊंगी। और उसकी सीढ़ियों पर अकेली भीख मांगूंगी। किसी और भिखारी को टपने तक नहीं दूंगी।

मैं जिज्ञासा के चासनी में अपने शब्दों को डुबोकर बोला–इतना पैसा होने के बाद भी भीख मांगोगी!

वो बोली – हां, मांगूंगी। क्योंकि मांगनेवाले को अहंकार नहीं होता है। और देनेवाले को लगता है कि वो ही दे रहा है। जबकि दाता तो केवल एक है।

मैं उस भिखारिन को दस का एक नोट देते हुए बोला–तुम कितना विद्वान हो माई!

वो बड़े साधारण शब्दों में बड़ी असाधारण बात बोली–विद्वान तो भाग्यवान के यहां नौकर होता है। है ना बाबू!

मैं झल्लाते हुए बोला– जब विद्वता से भाग्य ही श्रेष्ठ है। तो मेरा विद्वान होना व्यर्थ हुआ!

वो बोली–सूचनाओं के संग्रहण को विद्वता कहते हो बाबू! विद्वान तो स्वयं को जाननेवाला होता है।

मैं बोला– फिर मैं कैसे विद्वान हो सकता हूं? मुझे बताओ माई।

वो बोली–जिस दिन इस "मैं" को त्याग दोगे। विद्वान हो जाओगे।

मैं बोला–लगता है कि तुम्हारा पेट भरा हुआ है। इसलिए तुम ज्ञान की बातें करती हो। भूखे का प्रयोजन तो भोजन से है। ज्ञानता, महानता, विशालता, उदारता ये सब पेट भरे लोगों की बातें है।

वो बोली– वस्तु की बहुलता से किसका मन भरा है बाबू? चाहता और भूख कभी खत्म नहीं होती है। पेट भरा हुआ व्यक्ति तो भोग का चिंतन करता है। भूखा व्यक्ति ही अपनी किस्मत को कोसता हुआ योग का चिंतन करता है। है न बाबू!

मैं बोला– तुम भिखारिन हो। गंदे और बदबूदार कपड़े पहनी हो। पर तुम्हारा आत्म–संप्रत्यय बहुत ऊंचा है। तुम मेरे साथ चलो माई! मैं तुम्हें अच्छे कपड़े दिला देता हूं।

वो अपनी बदबूदार साड़ी को दिखाती हुई बोली– कीमत वस्तु की नहीं होती है। व्यक्ति की होती है बाबू! मैं ब्रांडेड कपड़ा पहनूंगी तब भी लोग कहेंगे कि ये फुटपाथ का ही कपड़ा है। और तुम फुटपाथ का कपड़ा पहनोगे तब भी लोग कहेंगेय ये ब्रांडेड है। है न बाबू!

मैं बोला–तुम बहुत सुंदर हो माई!

वो ठहाका लगाते हुए बोली–मैं तो कुरूप हूं। लोग मेरे बदबूदार कपड़ों से घृणा करते हैं। तुम कैसे कहते हो कि मैं सुंदर हूं। बोलो बाबू!

मैं उसी के लहजे में बोला–सुंदरता वस्तुनिष्ठ नहीं होती है माई। सुन्दरता तो व्यक्तिनिष्ठ होती है। है न माई!

उसने प्रेम से अपना हाथ हमारे माथे पे रख दिया। मेरे शरीर में अजीब जी–सा सिहरन महसूस होने लगा। मस्तिष्क शांत। रोम–रोम पुलकित हो गया।

मैं आंख बंद करके बोला–तुम कौन हो माई? तुम कोई साधारण स्त्री नहीं हो सकती।

वो मुस्कुराते हुए बोली—कौन स्त्री साधारण होती है बाबू? क्या तुम्हारी मां साधारण है? जिसने तुमको जन्म दिया। क्या सड़क पे चलनेवाली स्त्री साधारण है? जिसको देख के तुम आकर्षित होते हो।

मैं निःशब्द। वो फिर बोली – क्या सोच रहे हो बाबू?

मैं शांत होकर बोला – मैं तो कुछ सोच ही नहीं पा रहा हूं माई। भावनाओं के नूतन उमंग में विचार साथ नहीं दे रहे हैं। हमारी भाषा अक्षम और वाणी मूक हो गई है। मैं क्या करूं? क्या बोलूं? कुछ समझ नहीं आ रहा है। तुम्हारे खराब परिस्थिति से भी खराब हमारी उहापोह की स्थिति है। मैं आत्मसमर्पण करता हूं।

मैं हाथ जोड़ते हुए बोला –

हे मैल वस्त्र धारिणी, कटोरा कर धरे।

सुतरा स्वरूपनी माता, त्वं तीर्थमाश्रये।।

हे माते! मैं अपनी ही बुद्धि में उलझ गया हूं। मेरा मार्गदर्शन करो माते। मैं क्या करूं?

वो मुस्कुराते हुए बोली—सब खेल मांगने का है बाबू। मांगना सीखो। जैसे मैं तुमसे मांग रही हूं। तुम महादेव से मांगों। उनके जैसा देनेवाला कोई नहीं है। प्रभु के नाम का कीर्तन करो। मुमुक्षु बनो। भक्त बनो। जिज्ञासु बनो। स्त्री का सम्मान करो। वर्तमान में जीना सीखो। अपने कर्म से भाग्य का निर्धारण करनेवाले तुम साधारण नहीं हो बाबू!

मैं भिखारी हूं। तुम दानी हो। तुम मुझे दान में अपना गुस्सा, अहंकार, लोभ और मोह दे दो। अपनी वासना दे दो। और तुम निर्मल हो जाओ। पवित्र हो जाओ। तुम अपनी समीक्षा मत करो। दीक्षा लो। परमात्मा तुम्हारी प्रतीक्षा में है। परमात्मा तुम्हारी प्रतीक्षा में है३३

मुझे ऐसा लगा की मुझे उसने सम्मोहित कर लिया। मेरे आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। और मैं कब और कैसे घर आया। मुझे याद नहीं।

33 वास्तव में उस भिखारिन की व्यथा में कथा थी। मैं अब भी उसको ढूंढता है। मगर, वो मुझे मिल नहीं रही है। उस दिन घर पहुंचने पर मैं ये पंक्ति लिखा। इसे पढ़ने पर मुझे संतुष्टि मिलती है।३

रस अपमान के पान का न पान कीजिए।

कीजिए न मनमानी मगर मन का मान कीजिए।

नेह न रहे देह में, ऋषि दधीचि सा दान कीजिए।

वहम न कीजिए, अपने अहम का ज्ञान कीजिए।

नंगे नयन से जो दिखे सब नश्वर है पुष्पम !

कर लघु खुद को,रघुकुल शिरोमणि श्रीराम का ध्यान कीजिए।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है

-सुमित्रानंदन पंत"

जगदलपुर की यात्रा

असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

जून का महीना था। हमने संबलपुर में रात बिताई। सुबह आंख खुली तो मैंने बालकनी से बाहर का नजारा देखा, टिप–टिप पानी बरस रहा था, मौसम बड़ा ही सुहावना लग रहा था। सुबह के साढ़े पांच बज रहे थे, बारिश थम चुकी थी, हम नहा धोकर तैयार हो चुके थे। हमें अगले चार सौ किलोमीटर की दुरी तय करनी थी। पास के कमरे में राजू एवं मुन्नू जो कि मेरे पति के चचेरे भाई हैं, अब तक तैयार नहीं थे, सो मैं अपने पति के साथ अपना सामान उनके कमरे में रख कर आसपास चहल कदमी करने निकल पड़े। हमने नुक्कड़ पर चाय पी, रास्ते के लिए कुछ स्नैक्स लिए। एकाध किलोमीटर हम घूम आये। जबतक हम वापस होटल आये दोनों तैयार हो चुके थे। बारिश की वजह से हमारी गाड़ी भी धुल चुकी थी। राजू और मुन्नू पास ही ठेले पर चाय पिए और हम अपनी यात्रा पर निकल पड़े। अब मुन्नू ने स्टीयरिंग संभाल ली और तय किया गया कि बोलांगीर पहुंचने पर वहीं नाश्ता किया जायगा।

बारिश की वजह से रास्ते धुले लग रहे थे, मौसम बढ़िया हो गया था। साढ़े बारह दृ एक बजे के आसपास हम एक बाजार से गुजर रहे थे, हमने कुछ फल खरीदे, देखा वहीं कमल गठ्ठे बिक रहे थे, पूछने पर चार के बीस रूपये बताये। मैंने पहली बार कमल गठ्ठे बाजार में बिकते हुए देखे थे। शायद हम चारों ने पहले इसे देखा तक नहीं था सो उत्सुकतावश मैंने कुछ खरीदे। मुझे स्कूली दिनों की याद ताजा हो आई। मुन्नू ने राजू से कच्चे मुगफली और देशी खजूर खरीदवाए। कच्चे मुगफली और देशी खजूर खरीदने की बात मुझे समझ नही आई। खैर बाजार पीछे छुट चूका था हम आगे निकल गये।

रास्ते में सड़क किनारे आम बिकते दिखे, पूछने पर पचास रूपये किलो बताया। रांची में सत्तर–अस्सी रूपये किलो आम बिक रहे थे ओर यहाँ पचास रूपये किलो, सो लालचवश हमने दो किलो आम ले लिए। डेढ़ बजे के करीब हमने एक ढ़ाबे पर भोजन किया। करीब पौना घंटा हम वहां रुके, गाड़ी को ठंडा करना था सो मुन्नू ने बोनट खोल दिया था। फिर हम अपने गंतव्य को प्रस्थान कर गए। मुन्नू ने बताया आगे घाटी पड़ेगा हम बंदरों को मूंगफली और खजूर खिलाएंगे। घाटी में प्रवेश करते ही जंगली इलाका शुरू हो चूका था, बीस पच्चीस मिनट बाद ही हमें बंदरों के दर्शन होने लगे। बंदर अपने पुरे कुनबे के साथ सड़क पर नजर आने लगे और हम उन्हें मूंगफली और खजूर देने लगे, वे भी पूरी आत्मीयता से मूंगफली और खजूर लपकने लगे। लगभग एक–दो किलोमीटर तक बंदरों को खिलाने पर हमारे मूंगफली और खजूर समाप्त हो चुके थे और हम आगे चल पड़े।

रास्ता लंबा था मंजिल अभी दूर थी। अबतक हम उड़ीसा पार नहीं कर पाए थे। मुन्नू ने बताया कि सड़क किनारे लगे साइन बोर्ड पर जब जलेबी नुमा अक्षर दिखने बंद हो जाये तो समझ लो हम छत्तीसगढ़ में प्रवेश कर गये हैं। साढ़े चार बजे के आसपास बारिश शुरू हो गई ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे छत्तीसगढ़ की धरती पर हमारा स्वागत हो रहा हो। शाम के पांच बजे के करीब हम जगदलपुर पहुंचे, बूंदा–बादी अब भी चल रही थी।

पहले हम बाजार गये, चाय पिए और सब्जी बाजार की तरफ बढ़े। मुझे बाजार में टिंडे दिखाई दिए। एक अरसे बाद बाजार में मुझे टिंडे के दर्शन हुए थे सो मै अपने आप को रोक नहीं सकी। मुझे पूरा विश्वास था कि इन तीनों ने पहले कभी टिंडे नहीं देखे होंगे और न ही कभी खाया होगा। कुछ और सब्जियां खरीदी, मुन्नू और राजू चिकन ले आये और हम अपने गंतव्य को प्रस्थान किये। साढ़े छः बज गये थे। सबने मिलकर सामान गाड़ी से निकाला और पहले तल पर स्थित क्वार्टर पर गये। मैं रात के खाने की तैयारी में लग गई। रात को ही तय हो गया था कि मुन्नू सुबह अपनी ड्यूटी ज्वाइन करेगा और हम तीन घुमने मुन्नू की गाड़ी लेकर जायेंगे। राजू गाड़ी चलाएगा। वापसी में नाश्ता किया जायगा।

अहले सुबह हम सभी उठ गये। नहा–धोकर सभी तैयार हो गये, डेरे से सुबह की चाय पीकर हम निकल पड़े। तीरथ गढ़ जलप्रपात देखने के लिए हमने टिकट कटवाए। हम तीन लोग थे, पर ड्राइवर के नाम पर एक का टिकट नहीं लगा। हम खुश थे कि हमारे पचास रूपये बच गये। वहां हमने कुछ समय बिताया यादगार क्षणों, दृश्यों को मोबाईल में कैद किया और आगे कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान की तरफ निकल पड़े।

करीब ढाई–तीन किलोमीटर चलने पर हमे कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान का प्रवेश द्वार दिखाई पड़ा, वहां से करीब पांच–छः किलोमीटर अन्दर घने जंगल के बीच बने सडक से होते हुए हम अन्दर जा रहे थे। सुबह के आठ बज रहे थे किन्तु जंगल में पक्षियों की चह–चहाहट सुनाई नहीं पड़ रही थी और न ही किसी तरह की कोई आवाज, बिलकुल सन्नाटा था। हम चले जा रहे थे रास्ता समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहा था, आखिरकार एक कस्बा नजर आया, वहां चेकनाका था। आसपास पांच–छः खुली जीफ खड़ी थी कुछ कच्चे पक्के घर थे। मुआयना करने पर समझ आया कि इससे आगे हम अपनी गाड़ी नहीं ले जा सकते। पता करने पर मालूम हुआ कि आगे घुमने के लिए हमें जंगल सफारी बुक करनी होगी । एक गाइड भी लेनी होगी। काउंटर पर जाकर टिकट लेनी पड़ी। हमें टिकट के बाईस सौ रूपये देने पड़े, जिसकी दो प्रति मिली। एक प्रति हमने रख ली और दूसरी प्रति ड्राइवर को दी गई, जिसने टिकट लेकर जिप्सी तैनात कर दी, और गाइड को आवाज देकर बुलाने लगा। शायद गाइड कहीं गया हुआ था सो वह आता हूँ कहकर गया और कुछ देर में एक बड़ा–सा टार्च लेकर आया। हमने गाइड का इंतजार नहीं किया और उसे ही गाइड करने को कह जिप्सी में बैठ गये। हमारी जंगल सफारी चल पड़ी। शायद हम उस दिन के पहले पर्यटक थे। टिकट में शुल्क विवरण इस प्रकार था– भ्रमण हेतु सफारी वाहन शुल्क –1800/–, प्रवेश शुल्क प्रति पर्यटक 50/– जैव विविधता संरक्षण शुल्क प्रति व्यक्ति 50/– गाइड शुल्क –300/– कुल योग –2200/– हमें कोटमसर/नेतानार प्रवेश द्वार से प्रवेश की अनुमति मिली।

ड्राइवर एक कम ऊंचाई का गोरा लड़का था, बात–चीत का लहजा नेपालियों की तरह लग रहा था सो हमने पूछ ही लिया कि वह कहाँ का रहने वाला है। उसने अपने आप को वहां का स्थानीय निवासी बताया। अपना नाम मनोहर बघेल बताया। वह वहां का आदिवासी था। हमने छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के बारे में उससे जानकारी ली। अंदर जंगल में दो रस्ते दिखे, उसने बताया एक रास्ता उड़ीसा और दूसरा आंध्रप्रदेश जाता है। छत्तीसगढ़ भी उग्रवादी प्रभावित क्षेत्र है, दांतेवाडा की घटना से हम सभी परिचित हैं। यहाँ जंगल में स्थित साल के पेड़ काफी ऊँचे थे। जगह–जगह पर बड़ी–बड़ी दीमक के टीले दिखाई पड़ रहे थे, हमने सांपों के बारे के पूछा तो उसने बताया कि जंगल में सांप वगैरह होते ही हैं। हमने बंदरों के बारे में पूछा तो पता चला कि वे सैलानियों को देखकर अन्दर जंगल में भाग जाते हैं सामने नहीं आते।

फिर उसने जंगल के बीच एक झरने का दीदार करवाया जो चट्टानों पर से बह रहा था। हमने कुछ देर वहां का नजारा देखा, यह खूंटी के आगे स्थित पंचघाघ जलप्रपात सा लग रहा था। पौन–एक घंटा चलने के बाद उसने सड़क से हटकर एक खुली जगह पर गाड़ी रोक दी और कहा, "मैं आपलोगों को गुफा के अंदर घुमाऊंगा। वह टार्च लेकर गाड़ी से नीचे उतर गया, हम भी गाड़ी से उतर गये। वहां कुछ साईन बोर्ड लगे हुए थे, कुछ झूले और विश्राम करने के लिए शेड, पानी के नल और शौचालय बने हुए थे लेकिन इन सबकी स्थिति ठीक नहीं थी। साईन बोर्ड में लिखा हुआ था दृ जिन्हें साँस संबंधी दिक्कत हो, छोटे बच्चे, और ह्रदय रोगी गुफा के अन्दर न जाएँ। हम इधर–उधर मुआयना करने के बाद ड्राइवर के साथ गुफा के अन्दर प्रवेश कर गये। हमने भी अपने साथ लाये पेन्सिल टोर्च जला ली। रास्ता सीधा न था, सुरंग सरीखे गुफा में हमे दाखिल होना था। आगे–आगे ड्राइवर अपने टार्च की रोशनी में रास्ता दिखाते हमें आगाह करते बढ़ रहा था , देखा, अन्दर गुफा में नीचे उतरने के सुविधा के लिए लोहे की सीढियाँ रेलिंग के साथ बनी हुई थी। हम भी लोहे की बनी सीड़ियों पर रेलिंग पकड़ते हुए झुक–झुक कर आगे बढने लगे। पिछले दिन बारिश हुई थी अतः मिटटी गीली थी। कुछ घुमावदार संकरा सा रास्ता पार कर हम एक बड़े खुले होलनुमा जगह पर पहंचे। चट्टानों से पानी रिस रहा था। उसने टार्च की रोशनी में एक ओर ईशारा करते हुए बताया कि आगे हम उस रस्ते से जायेंगे। "पूरा गुफा घुमने में हमें एकाध घंटा लगेगा, यह यहाँ का सबसे बड़ा गुफा है," उसने हमें बताया।

मुझे आगे जाने का साहस नहीं था मैंने जबाव दे दिया, यही हाल मेरे पति एवं राजू का था। फिर क्या था हम सभी गुफा से बाहर आ गये। अंदर आक्सीजन की कमी थी, उमस और गर्मी के कारण हम पसीने से भींग गये। सुरंग से बाहर आकर हमने चौन की साँस ली। कुछ देर वहीं बाहर घुमे और फिर हम वापसी के लिए चल पड़े। एक जगह उसने गाड़ी धीमी की और दिखाया एक हिरण अपने बच्चे के साथ सड़क पार कर रही थी, सड़क पार कर झाड़ियों में ठिठक कर हमें देखने लगी। हमने भी हिरण के फोटो लिए और आगे बढ़ गये। हम यह सोचकर खुश थे कि चलो कम से कम एक जंगली जानवर तो हमें देखने मिला।

इस गुफा तक आने में हमे एक–डेढ़ घंटा लगा था वहीं वापसी में हमें आधा घंटा भी नहीं लगा। बाहर आकर देखा दो ग्रुफ जंगल सफारी को जाने के लिए तैयार थे। कांगेर घाटी का भ्रमण कर हम वापस डेरे पर लौट। रास्ते में कोई ढंग का रेस्टोरेंट नहीं मिलने के कारण हम नाश्ता नहीं कर पाए। तय किया कि हम डेरे पर ही नाश्ता करेंगे।

तबतक मुन्नू भी लौट चूका था उसने आधे दिन की छुट्टी ले ली थी। दोपहर के खाने के बाद हम थोडा आराम किये फिर तीन बजे निकल पड़े। मुन्नू भी साथ था। वह हमें चित्रकोट ले जा रहा था। चित्रकोट स्थित जलप्रपात का बड़ा ही मनोरम दृश्य था। यहाँ काफी भीड़ थी। काफी चहल–पहल थी, सुरक्षा, रोशनी की अच्छी व्यवस्था थी रिसोर्ट और रेस्टोरेंट भी थे। रिसोर्ट एरिया भी हम घूम आये। इस जलप्रपात की तुलना विश्व प्रसिद्ध नियाग्रा जलप्रपात से की जाती है इसे भारत का मिनी नियाग्रा कहा जाता है। वहां हमने चाय पी और वापसी की राह पकड़ ली।

रस्ते में हम एक व्यू पॉइंट पर गये ,वहां काफी चट्टानें थी आगे एक गहरी खाई थी। सुरक्षा कारणों से खाई के चारों ओर कंटीले तार के घेरे थे, हमने वहां कुछ समय बिताया। वहां पर ग्राम समिति के कुछ महिलाएं थी जिन्होंने हमें पचास रूपये का टिकट दिया। वहां से हम सीधे जगदलपुर बाजार अथार्त मुख्य शहर की तरफ आये। तब तक अंधेरा हो चूका था। सरोवर के पास हमने गाड़ी पार्क की और सरोवर के चारों और बने रास्ते पर चहल कदमी करने लगे। वहां रंगीन रोशनी की व्यवथा थी, लोग परिवार सहित घुमने आये हुए थे। मुन्नू ने बताया शाम आठ बजे के बाद यहाँ रोजाना गीत–संगीत की महफिल जमती है, आर्केस्टा होता है। सामने सड़क के उस पार एक स्थानीय व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध रेस्टोरेंट था जहाँ हमने रागी डोसा,साबूदाना बड़ा और लस्सी का लुफ्त उठाया। फिर हम अपने डेरे पर लौट आये । हम कापी थक चुके थे, अतः रात के लिए हमने रोटियां पार्सल करवा लीं।

अगले दिन हमारी वापसी की टिकट थी। दोपहर के दो बजे जगदलपुर–राउरकेला एक्सप्रेस से हम मुन्नू को अलविदा कर निकल पड़े। सुबह अपने निर्धारित समय से आधा घंटा विलंब से हम राउरकेला पहुंचे और पूरी–हटिया तपस्विनी एक्सप्रेस से हम रांची आ गये।

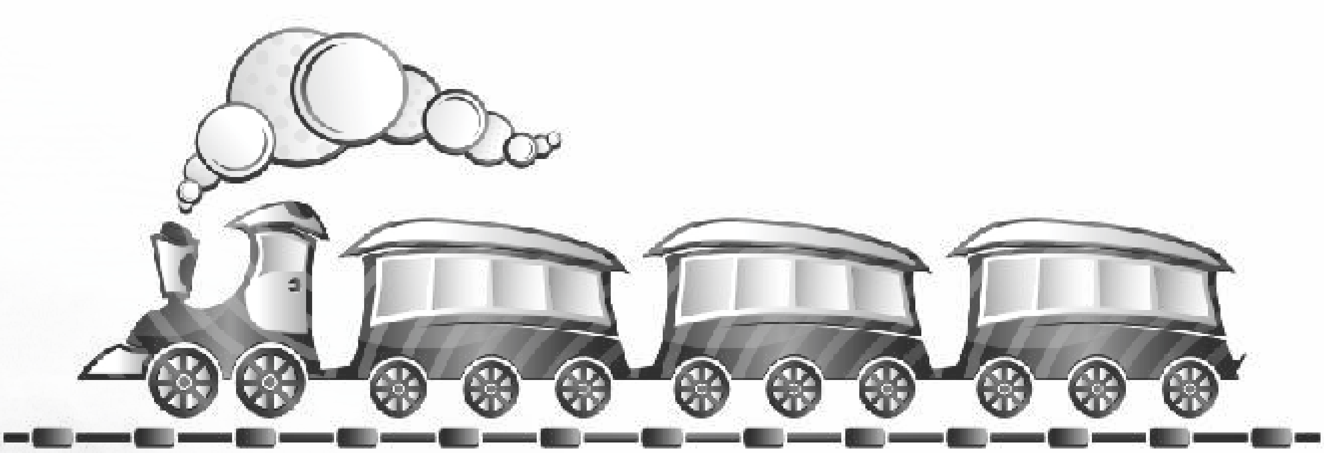

"भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार हैं

- टी.माधवराव"

अग्निवीर योजना

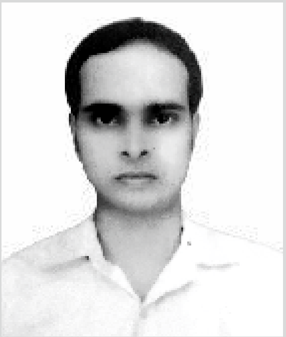

मन्नु कुमार सिंह
लेखाकार

हर किसी को अपने घर में हरि चाहिए, ओह गलती हुई माफ कीजियेगा। हां दुसरे शब्दो में यह कह सकते है कि हर किसी को अपने घर में राम चाहिए। ओह दुबारा गलती हुई क्योंकि राम के चाहने कि पहली शर्त हीं है तीन माताएं या फिर चौदह वर्ष पुत्र वियोग, जिसके लिए यह प्रतीत नहीं होता कि वर्तमान समाज में कोई भी माता या पिता इसके लिए मानसिक रूप से तैयार होगा। तो क्या व्यंगात्मक रूप से प्रचलित यह लोकोक्ति सच प्रतीत होती हुई हमारे समाज के यथार्थ रूप को उजागर कर रही है, कि हर किसी को भगत सिंह चाहिए जो समाज में क्रांति ला सके, लेकिन शर्त ये है कि अपने घर में नहीं पड़ोस के घर में क्योंकि कौन अपने पुत्र को बलि का बकरा बनाये। समाज में सुरक्षा और अधिकार तो सभी को चाहिए पर उसके लिए लड़ना और आवाज उठाना नहीं है। उपरोक्त लिखी हुई बातों से मैं आपका ध्यान हाल हीं में भारत सरकार द्वारा लाई गयी एक ऐसी प्रचलित योजना से जिससे शायद हीं कोई ऐसा हो जो वाकिफ नहीं होगा क्यूंकि इस योजना की प्रतिक्रिया भारत के विभिन्न राज्यों में एक ऐसी छवि प्रकट की है जो कल्पना से परे था। इस योजना का नाम है ''अग्निवीर योजना''।

''अग्निवीर योजना'' भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक ऐसी महत्वपूर्ण योजना है जो राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद के खिलाफ सशक्त प्रतिक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय सुरक्षा संगठनों को विशेष रूप से सशक्त करना था ताकि आतंकवादी हमलों को पहचाना, रोका और उनकी योजनाओं का विफल किया जा सके। यह योजना विशेष रूप से आतंकवादी संगठनों के खिलाफ भारत कि सैन्य शक्ति को मजबूत रूप प्रदान करने के साथ–साथ भारत के युवा वर्ग को अनुशासन युक्त नागरिक बनाना था ताकि भविष्य में हम भारतवासी आतंकवाद के खिलाफ एकजुट रहें। किन्तु अपने देश कुछ तथाकथित दलों के बहकावे में आकर भारत के न जाने कितने युवाओं के साथ मिलकर इन दलों के शरारती तत्वों द्वारा इस योजना का काफी विरोध किया गया एवं भारत के करोड़ो दृ अरबों रूपये के सार्वजनिक सम्पदा को नुकसान पहूँचाया गया। इसके विरोध में ट्रेनों एवं वाहनों में आग लगा दी गयी जिससे कितने हीं यात्रियों को भटकने पर मजबूर कर दिया गया। ये सभी घटनाएं हमारे समाज से एक सवाल पूछने पर मजबूर करती है, कि क्या सच में यह योजना इतनी बुरी थी कि इसका विरोध करते हुए आप अपने हीं देश के नागरिकों के कष्टों का ख्याल भी नहीं करेंगे, या फिर दुसरे शब्दों में कि क्या आप देश की सेवा करने के लिए सच में तैयार हैं।

खैर अग्निवीर योजना की कहानी उस दिन से जुड़ी है जब भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध एक सशक्त और व्यापक प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए एक संगठन बनाने का फैसला किया। इसके अंतर्गत, नई तकनीक, गहन जासूसी, और सुरक्षा प्रक्रियाओं के विकास के लिए विशेष ध्यान दिया गया। क्योंकि इन सब बाधाओं के वावजूद यह योजना भारत को आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ एक नया रूप देने में सफल रही और देश की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

अग्निवीर योजना के द्वारा देश के सुरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है और उसे विपणन, ताकत, और प्रतिस्पर्धा में बढ़ावा देने में मदद कर रही है। यह योजना आज देश के आतंकवादी संगठनों के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । इन सब साकारात्मक योगदान को देखते हुए यही कहा जा सकता है जो युवा देश के लिए इस योजना से जुड़े और देश सेवा में लगे है उन्हें ह्रदय से सहर्ष धन्यवाद हम देशवासी हमेशा आपके ऋणी रहेंगे।

एक सच्ची घटना मेरे गांव की

बृज नंदन कुमार
द्वारा श्रीमती असाई माई पाड़ेया व.ले.अ.

बात उन दिनों की है जब मैं 1985 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कर आगे की पढ़ाई के लिए अपने चाचा के यहाँ पटना पहुंचा जो कि भारतीय खाद्य निगम में पदस्थापित थे।

उस समय एकीकृत बिहार राज्य में उच्च शिक्षण संस्थानों में पटना विश्वविद्यालय विख्यात था। चूँकि मेरा रुझान प्रशासनिक सेवा की तरफ था अतः मैंने कला संकाय चुना और पटना कॉलेज में दाखिला ले लिया। इसी दरम्यान मेंरे चाचाजी का तबादला असम, गुवाहाटी हो गया अतः मुझे मिंटू छात्रावास में रहना पड़ा। पटना प्रवास के दौरान मेरी दोस्ती मनीष, दिलीप, राजेश और नारायण से हुई जो मेरे सहपाठी भी थे और मेरे चाचा के मोहल्ले लोहानीपुर में रहते थे। उनमे से नारायण पाठक से मेरी घनिष्ठता अधिक थी। हमदोनों अकसर छुट्टियों में एक दुसरे के गांव जाया करते थे। नारायण पाठक को हम प्रायः पाठक ही सम्बोधित करते थे। पालीगंज,पटना पाठक का गांव था, तो मै डोमलाई, पश्चिम सिंहभूम का रहने वाला था।

समय के साथ मैं स्नातक प्रतिष्ठा कर गया और मेरे चाचाजी का भी तबादला वापस पटना हो गया। अब मैं अपने दोस्तों के साथ प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने लगा। इसी दरम्यान मैं किसी करणवश दो दृचार दिनों के लिए अपने गांव आया हुआ था। दिसम्बर का महीना था, धान की कटाई हो चुकी थी तथा धान के गठ्ठर खलिहान में पड़े हुए थे, भोर में हमें बैलों की सहायता से मिसाई दृदौराई करनी होती थी अतः हम अन्य ग्रामीणों की तरह रात को खलिहान में ही सोया करते थे।

हम सभी मित्रों ने दारोगा भर्ती 1994 के लिए आवेदन दिया था, सो मेरा प्रवेश पत्र डाक द्वारा मेरे चाचाजी के पते पर पहुंचा। यूँ तो मैं दो–चार दिनों के लिए ही गांव आया था किन्तू अपनी माटी की खुशबु की बात ही कुछ और होती है, मैं आठ–दस दिन रुक गया। चौथे दिन मेरी परीक्षा की तारीख थी, मैं इन सबसे अनभिज्ञ था।

मेरे चाचाजी ने अन्य मित्रों के माध्यम से पाठक को बुलावा भेजा और कहा, "पाठक, तुम्हारे दोस्त का प्रवेश पत्र आया है ,चौथे ही दिन परीक्षा है, उसे तो जल्द आना था पर पता नहीं वह इतने दिनों तक क्यों रुका हुआ है, तुम गांव जाकर उसे ले आओ", पाठक ने हामी भरते हुए कहा, "जी चाचाजी, मै आज ही गांव के लिए निकल पड़ता हूँ।" चाचाजी ने उसके हथेली पर कुछ रूपये रखते हुए कहा दृ "तुम दोनों के रास्ते के खर्चे के लिए है।" पाठक ट्रेन से टाटानगर पहुंचा फिर पैसेंजर ट्रेन से जराईकेला स्टेशन पहुंचा, जो हमारे गांव का निकटतम रेलवे स्टेशन है। गांव पहुँचने में उसे रात्रि के नौ बज गये।

मैं रात का भोजन कर अपने नौकर के साथ अपने खलिहान में पुआल से बने गुफानुमा झोपडी के अंदर सोने चला गया। माँ के हाथों से बुने खुजूर की चटाई और पुआल के गद्दे दिसंबर माह के कपकपाती ठण्ड को मात देर रहे थे। जल्द ही मेरी आंख लग गई।

घर पहुंचने पर पाठक ने दरवाजा खटखटाते हुए आवाज लगाई, चाची....., मैं पाठक, पटना से आया हूँ। कुछ देर बाद मेरी माँ ने आंखें मलते हुए दरवाजा खोला, और आश्चर्यचकित होकर पूछा, "इतनी रात, सब खैरियत तो है? "जी चाची, माँ के पांव छूते हुए पाठक ने जबाव दिया। माँ ने कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा,"अंदर आ जाओ, बाहर कापी ठंड है।" पाठक ने माँ को आने का सबब बताया। माँ ने लोटे में गर्म पानी देते हुए कहा, "हाथ मुह धोकर खाना खालो।" माँ ने ठेठ देशी अंदाज में चटाई बिछाई और खाना परोसा। जीरा और लाल मिर्च से छोंकी हुई उरद और कुल्थी की मिक्स दाल, आलू भुजिया के साथ चावल स्वाद लेकर खाया। तबतक काफी रात हो चुकी थी। माँ ने एक लाठी और टार्च देकर खलिहान मेरे पास भेज दिया। खलिहान मेरे घर से थोड़ी ही दुरी पर था, सो वह जल्द ही

मेरे पास पहुंच गया। आते ही उसने मुझे झकझोरते हुए नीद से जगाने का प्रयास करते हुए दोस्ताना अंदाज में कहने लगा, अबे, उठता है कि सोता ही रहेगा? मैं और नौकर गहरी नींद में थे। दोबारा आवाज लगाने पर चिरपरिचित आवाज मेरे कानों में गूंजी तो सहसा यकीन नहीं हो रहा था कि यह आवाज मेरे जिगरी दोस्त की है। मै एकाएक उठा और आंखे मलते हुए आश्चर्य भाव से कहा, "अबे तू? और इस वक्त यहाँ ? तुझे कल ही वापस पटना मेरे साथ चलना है कहते हुए उसने आने का प्रयोजन बताया। उसे गम्भीर और सहमा देख मैंने तपाक से पूछा, तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ा हुआ है? "तुम्हारे चक्कर में मै आज न जाने किस मुसीबत में फंसते फंसते बचा। तुम यहाँ आराम से सो रहे हो और मै इतनी ठण्ड में भी पसीने पसीने हो रहा हूँ ", गहरी साँस लेते हुए उसने कहा। "पहेली मत बुझाओ, साफ–साफ बताओ, माजरा क्या है?" बेताब होकर मैंने पूछा। सहमते हुए उसने स्टेशन से गांव आने के दौरान रास्ते में हुई आपबीती घटना सुनाई जो कापी रोचक एवं लोमहर्षक थी।

"पैसेंजर ट्रेन साढे आठ बजे जरईकेला स्टेशन पर रुकी, ठंड का मौसम था रात भी हो चुकी थी, दो–चार मुसाफिर ही गाड़ी से उतरे थे। स्टेशन परिसर से बाहर आकर पक्की सड़क छोड पगडण्डी से होते हुए तुम्हारे बारे में ही सोचते हुए गांव की ओर चला जा रहा था कि रास्ते में पड़ने वाले नाले के पास मुझे किसी आदमी के पुकारने की आवाज सुनाई दी। मैंने पीछे मुडकर देखा तो वहां कोई नहीं था। चांदनी रात थी इसलिए दूर–दूर तक साफ दिखाई दे रहा था। शायद यह मेरे मन का वहम था यह सोचकर मै आगे बढ़ चला। नाले के पास मुझे छप–छप की आवाज सुनाई पड़ी। पास में छोट–बड़े पेड़–पोधे और चट्टान रात के सन्नाटे को भयावह बना रहे थे। पास ही लावारिश लाशों को दफनाया और जलाया जाता था यह बात मुझे मालुम थी अतः मेरे रोंगटे खड़े हो गये फिर भी मैं दिल को मजबूत करके आगे बढ़ता रहा। मैं नाला पार कर चूका था, सहसा मुझे सामने के बरगद के पेड़ के पत्ते और टहनियां काफी तेजी से हिलते दिखाई दिए और सरसराहट की आवाज भी सुनाई देने लगी, ऐसा लग रहा था जैसे कोई पेड़ पर बालू छींट रहा हो। लेकिन आसपास के सभी पेड़ बिलकुल शांत थे। मेरे मन में कई तरह की आशंकाए उठ रही थी। मुझे काटो तो खून नहीं। मेरे कदम ठिठक गये, साहस जुटाकर मैं अपने इष्टदेव का स्मरण कर ज्ञात मंत्र का जाप करते हुए तेज कदमों से गांव की तरफ चल पड़ा। गांव की सीमा पर कुत्तों के भोंकने की आवाज ने मुझे ढाढस बंधाया, दिल को तसल्ली हुई कि मैं सकुशल गांव पहूँच गया।"

पाठक ने आपबीती सुनाकर गहरी साँस लेते हुए मुझे अगले दिन के कार्यक्रम के बारे में बताया और हम सो गये। मुर्गे की बांग से हमारी नींद खुल गई। सुबह हम गांव के दक्षिणी छोर पर बहने वाली कोयल नदी में नहा–धोकर घर आये। माँ ने हमें नाश्ते में गर्मागर्म चावल की चिल्का रोटी चाय के साथ दी। फिर हम पटना जाने की तैयारी में लग गये। दोपहर के भोजन के उपरांत हम टाटानगर के लिए पैसेंजर ट्रेन से निकल पड़े। टाटा से हमें पटना के लिए गाड़ी पकडनी थी, जो शाम के सात बजे खुलती थी। समय से हम टाटा पहूँच गये। पटना के लिए टिकट ली और हमें सीट भी मिल गई। गाड़ी अपने निर्धारित समय पर खुल गई। हम आमने–सामने मुखातिब होकर बैठे थे और बातों का सिलसिला निकल पड़ा।

बातों–बातों में रात की घटना का जिक्र करते हुए मैंने पाठक से पूछा– क्या तुम भूत–प्रेत, रूहानी शक्तियों पर विश्वास करते हो? पाठक ने गहरी साँस लेते हुए कहा, "सच कहूँ तो मैं वैसे इन सभी के अस्तित्व को नकारता हूँ, पर जब हम चेतन मन से घटित होनेवाले घटनाओं के साक्षी बनते हैं, तो हम परालौकिक शक्तियों में विश्वास करने के लिए बाध्य हो जाते हैं।" कल रात की घटना ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि कुछ न कुछ ऐसी रहस्यमयी ताकतें हैं जो हमें दिखाई तो नहीं देती पर अपने वजूद होने का अहसास करा ही देती हैं, जिसे तुम कोई भी नाम दे सकते हो। और यह भी सत्य भी है कि ईश्वर के प्रति हमारी आस्था इन विकट परिस्थितियों में साहस का संचार और डर का नाश करती है। मैं भी उसकी बातों से सहमत था।

> **"हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं**
>
> **-मौलाना हसरत मोहानी"**

दोस्ती का जादुई सफर

वैभव नंदन डांगिल
द्वारा श्रीमती असाई माई पाड़ेया व.ले.अ.

एक छोटे से कस्बे में छह दोस्त रहते थे– राजदीप, वैभव, विशाल, सनी, अभिजीत और केशव। ये सभी कॉलेज के छात्र थे और अलग–अलग क्षेत्रों में पार्ट–टाइम काम कर रहे थे। उन्हें एक ऐसा कमरा चाहिए था जहाँ वे पढ़ाई कर सकें, आराम कर सकें और अपने सपनों को साकार कर सकें।

एक दिन राजदीप ने कहा, ''हमें एक ऐसा कमरा चाहिए, जहाँ हम सभी एक साथ बैठकर अपने मनपसंद काम कर सकें।'' विशाल ने सुझाव दिया, ''हमें अपने पार्ट–टाइम काम से पैसे जमा करने होंगे। हम सब मिलकर मेहनत करेंगे और इस सपने को सच करेंगे।''

सभी दोस्तों ने सहमति व्यक्त की और अपने–अपने कामों में जी–जान से जुट गए। केशव ने अपनी पेंटिंग्स बेचनी शुरू की, सनी ने अपने गहनों का डिजाइन करना शुरू किया, विशाल ने टेक्नोलॉजी में फ्रीलांसिंग करना शुरू किया, वैभव ने ट्यूशन देना शुरू किया, अभिजीत ने एक कैफे में काम तो राजदीप ने डिलीवरी का काम करना शुरू किया।

कुछ ही महीनों की कड़ी मेहनत के बाद, दोस्तों ने पर्याप्त पैसे जमा कर लिए। उन्होंने एक सुंदर सा कमरा देखा जो उनके बजट में था। वह कमरा एक पुरानी बिल्डिंग में था, लेकिन बहुत ही आकर्षक और आरामदायक था। राजदीप ने खुशी से कहा, ''यह कमरा बिल्कुल परफेक्ट है! हम यहाँ अपनी पढ़ाई कर सकते हैं और साथ ही मजे भी कर सकते हैं।'' सभी ने सहमति जताई और उन्होंने कमरा किराये पर ले लिया। वे सभी बहुत खुश थे और अपने नए कमरे में पार्टी करने का प्लान बनाने लगे।

कमरा किराये पर लेने के कुछ दिन बाद, उन्होंने अपने नए कमरे में पहली पार्टी रखी। सबने मिलकर कमरे को सजाया और अपने पसंदीदा गाने बजाए। पार्टी शुरू हुई और सभी ने बहुत मजे किए। वे सब इतने खुश थे कि उन्हें समय का भी ध्यान नहीं रहा। वैभव ने कहा, ''चलो, हम सब एक साथ बैठकर एक फोटो लेते हैं। यह पल हमें हमेशा याद रहेगा।'' उन्होंने एक साथ फोटो खिंचवाई कि तभी अचानक एक चमकीली रोशनी कमरे में फैली। सभी चौंक पड़े और जब उन्होंने आंखें खोलीं, तो उन्होंने खुद को एक अजीब और अनजान–सी दुनिया में पाया।

सभी दोस्त एक दूसरे की तरफ देख रहे थे और सोच रहे थे कि आखिर यह क्या हो गया। विस्मित होकर वे एक दूसरे से पूछने लगे, ''यह कौन सी जगह है? हम यहाँ कैसे आ गए?'' सनी ने कहा, ''मुझे नहीं पता, लेकिन हमें एक साथ रहना होगा और इस जगह से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ़ना होगा।'' उन्होंने उस अजीब दुनिया में खोज शुरू की। वहां हर चीज असामान्य थी– पेड़, पौधे, जानवर, सबकुछ अजीब और अनजाना था। हर रंग चमकीला और अप्राकृतिक था, जैसे किसी सपने में हो। पेड़ सुनहरे थे और फूलों से रोशनी निकल रही थी। हवा में मिठास की गंध थी, और पक्षियों की आवाजें संगीत की तरह लग रही थीं।

अभिजीत ने कहा, ''यह जगह एक तरफ बहुत सुंदर है, पर दूसरी तरफ डरावनी और रहस्यमयी भी।''

विशाल ने कहा, ''मुझे तो लग रहा है जैसे हम किसी जादुई दुनिया में आ गए हैं।''

सभी दोस्त किसी तरह इस दुनिया से निकल भागना चाहते थे, लेकिन दूसरी तरफ वे इसके रहस्यों को जानने के लिए उत्सुक भी थे। वे धीरे–धीरे आगे बढ़ते हुए इस अनजान दुनिया का निरीक्षण करने लगे। चलते–चलते, उन्होंने एक पुराने विशाल पेड़ के नीचे एक बूढ़े व्यक्ति को देखा। वह व्यक्ति लंबे सफेद बालों और दाढ़ी वाला था, और उसने एक पुराना चोगा पहना हुआ था। उसने उन्हें देखकर मुस्कुराते हुए कहा, ''मैं तुमलोगों का ही इंतजार कर रहा था।''

वैभव ने आश्चर्यचकित होकर कहा, ''आप हमें जानते हैं?''

बूढ़े व्यक्ति ने कहा, ''मैं यहाँ का संरक्षक हूँ। वह कमरा, जहाँ से तुम आए हो, कभी मेरा हुआ करता था। मैं एक जादूगर था और अपनी जादूई विद्या का अभ्यास वहाँ करता था। एक दिन, एक गलती से मैंने एक पोर्टल खोल दिया और यह दुनिया बन गई।''

केशव ने कहा, ''क्या आप हमें घर वापस जाने का रास्ता बता सकते हैं?''

बूढ़े व्यक्ति ने सिर हिलाते हुए कहा, ''हाँ, मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। लेकिन तुम्हें कुछ चुनौतियों का सामना करना होगा। यह दुनिया उनलोगों के लिए नहीं है जो डरते हैं, बल्कि उनलोगों के लिए है जो दिल से मजबूत हैं।''

बूढ़े व्यक्ति ने कहा, ''तुम प्रत्येक को मेरी एक पहेली सुलझानी होगी। ये पहेलियाँ तुम्हारे चरित्र को परखेंगी और तुम्हारी दोस्ती की भी परीक्षा लेंगी। अगर तुम सभी छह पहेलियाँ हलकर लेते हो, तो तुम घर वापस जा सकते हो।''

बूढ़े व्यक्ति ने अभिजीत की तरफ ईशारा करते हुए कहा ये तुम्हारे लिए । पहली पहेली अभिजीत के लिए थी: ''मैं कभी थकता नहीं, हमेशा चलता हूँ। मुझे कोई देख नहीं सकता, पर मैं हर किसी के साथ हूँ। मैं क्या हूँ?''

अभिजीत ने कुछ सोचा और कहा, ''यह समय है। समय कभी नहीं थकता और हमेशा चलता रहता है।''

बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा, ''सही उत्तर।''

दूसरी पहेली राजदीप के लिए थी। ''मेरे बिना कोई कुछ नहीं कर सकता। मैं सबसे महत्वपूर्ण हूँ, पर मुझे कोई देख नहीं सकता। मैं क्या हूँ?''

राजदीप ने सोचा और कहा, ''यह आस्था है। बिना आस्था के कुछ भी नहीं किया जा सकता।''

बूढ़े व्यक्ति ने सहमति में सिर हिलाया, ''सही उत्तर।''

तीसरी पहेली केशव के लिए थी। ''मैं रंग–बिरंगी हूँ, पर मेरे पास कोई आकार नहीं है। लेकिन मैं भावनाओं को व्यक्त करती हूँ। मैं क्या हूँ?''

केशव ने सोचते हुए जवाब दिया, ''यह कला है। कला भावनाओं को व्यक्त करती है और रंग–बिरंगी होती है।''

बूढ़े व्यक्ति ने हंसते हुए कहा, ''सही उत्तर।''

चौथी पहेली विशाल के लिए थी – ''मैं बहुत नाजुक हूँ, पर जबतक मुझे तोड़ा न जाए, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहती हूँ। मैं क्या हूँ?''

विशाल ने दिमाग पर बल देते हुए कहा, ''यह विश्वास है। विश्वास बहुत नाजुक होता है, पर जबतक इसे तोड़ा न जाए, यह हमेशा साथ रहता है।''

बूढ़े व्यक्ति ने कहा, ''सही उत्तर।''

पाँचवी पहेली वैभव के लिए थी – ''मैं अदृश्य हूँ, पर मेरी शक्ति सबसे बड़ी है। मैं हर चीज को बदल सकता हूँ। मैं क्या हूँ?''

वैभव ने गहरी साँस लेते हुए कहा, ''यह ज्ञान है। ज्ञान अदृश्य होता है, पर इसकी शक्ति सबसे बड़ी होती है।''

बूढ़े व्यक्ति ने मंद–मंद मुस्कुराते हुए कहा, ''सही उत्तर।''

छठी और अंतिम पहेली सनी के लिए थी– ''मैं सबको जोड़ता हूँ, पर मुझे कोई छू नहीं सकता। मैं हर रिश्ते की नींव हूँ। मैं क्या हूँ?''

सनी ने सोचा और मुस्कुराते हुए कहा, ''यह प्रेम है। प्रेम सबको जोड़ता है और हर रिश्ते की नींव है।''

बूढ़े व्यक्ति ने खुशी से कहा, ''सही उत्तर। तुम सबों ने अपनी–अपनी पहेलियाँ हल कर ली हैं। अब तुम वापस जा सकते हो।'' बूढ़े व्यक्ति ने बुदबुदाते हुए मंत्रों का जाप किया और कमरे का दरवाजा खोल दिया ।

दरवाजा खुलते ही वे फिर से चमकीली रोशनी में घिर गए और जब उन्होंने आंखें खोलीं, तो पाया कि वे वापस अपने कमरे में थे। आश्चर्य चकित होकर सभी एक दूसरे को देखकर हंसने लगे और खुशी से गले मिले।

विशाल ने कहा, ''यह तो एक अद्भुत अनुभव था। अब हम और भी मजबूत बन गए हैं।''

सभी दोस्तों ने सहमति जताई और एक नई शुरुआत के साथ अपने सपनों को साकार करने के लिए फिर से मेहनत करने लगे। उन्होंने सीखा कि एकता और मेहनत से वे किसी भी मुश्किल का सामना कर सकते हैं। उनके लिए यह घटना एक यादगार और प्रेरणादायक अनुभव बन गई।

और इस तरह, छह दोस्तों की यह अद्भुत कहानी समाप्त होती है, जो सिखाती है कि सच्चे दोस्त हमेशा एक दूसरे के साथ खड़े रहते हैं और हर मुश्किल का सामना मिलकर करते हैं।

"भाषा की समृद्धि स्वतंत्रता का बीज है

-लोकमान्य तिलक"

मौन की महिमा

कुन्दन कुमार
लेखाकार

मौन की महिमा अपरंपार है। कई बार जो संदेश मौन के माध्यम से दिया जा सकता है, उसकी तुलना शब्दों से नहीं की जा सकती। कई बार कठिन क्षणों में आदमी शब्दों या वार्तालाप में उलझकर रह जाता है और भ्रम की स्थिति उभरकर सामने आ जाती है। इसीलिये नपे तुले कम से कम शब्दों में बात की महत्ता प्रतिपादित की गई है। मौन इससे भी एक कदम आगे है बशर्ते आप स्वयं में संदेश की काबिलियत का विकास व्यक्तित्व में भर सकें। गांधीजी तो सप्ताह में एक पूरे दिन का मौन रखा करते थे।

एक बार एक किसान की कीमती घड़ी भूसे के एक बहुत विशाल ढेर में कहीं खो गई। उस घड़ी का उसके लिये भावनात्मक मूल्य था। उसने खुब खोजा यहां तक कि मैदान में खेल रहे बच्चों को ईनाम शर्त पर ढूंढवाकर भी उसे खोज नहीं पाया। उल्टे भूसा सब ओर फैल गया।

अंत में जब थक हारकर किसान बैठने ही वाला था कि एक छोटा सा बालक उपस्थित हुआ और मदद की पेशकश की। किसान ने एक पल उसकी छोटी उम्र देखकर उसे आश्चर्य के भाव से देखा और फिर हां कर दी। थोड़ी देर बाद देखा कि बच्चा घड़ी लेकर हाजिर हुआ तथा किसान की हथेली पर रख दी। पूछे जाने पर बालक ने बताया कि मैंने अधिक कुछ नहीं किया सिवाय इसके कि धरती पर कान गड़ाकर बैठ गया ताकि उस मौन वातावरण में घड़ी की टिक टिक सुन सकूं।

बात का निष्कर्ष सिर्फ इतना है कि अस्थिर मस्तिष्क से सधा हुआ मौन भी शांत मस्तिष्क अच्छी तरह सोच सकता है। अतः दिन में कम से कम एक बार अवश्य शांत तथा मौन रहकर अपने अंदर की आवाज सुनें। मन मस्तिष्क को साधें। यहीं से आपको जीवन को साधने का मंत्र प्राप्त होगा।

क्या जरूरी है जुबां बात करे, होंठ हिलें
खामोशी देती है पैगाम, तुम्हें क्या मालूम

"हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है
-माखनलाल चतुर्वेदी"

अमिता

ब्यूटी कुमारी
द्वारा संतोष कुमार राय,
लेखाकार

आज 21वीं शताब्दी में दुनिया जहाँ चाँद, मंगल व अंतरिक्ष की यात्राएँ कर रही है, बेटियाँ हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है। वहीं कुछ जगहों पर आज भी बेटियाँ समाज की रूढ़िवादी मानसिकता का शिकार है, उनकी मानसिकता इस कदर भ्रष्ट है कि वे बेटियों को किसी वस्तु के भांति सिर्फ परिवार के वंश को बढ़ाने का माध्यम मानते हैं। हमारे देश में बहुत सी ऐसी महिलाएँ हुई जिन्होंने इस मानसिकता से ऊपर उठकर अपने परिवार, समाज व शहर का नाम रोशन किया है, वैसी ही एक कहानी है अमिता की।

अमिता की कहानी

अमिता का जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उसके परिवार में कुल छः लोग थे– अमिता, उसकी माँ, पिताजी, दादीजी, एक बड़ी बहन और एक बड़ा भाई। वह सबसे छोटी थी। बड़ी बहन की शादी हो चुकी थी और भाई पढ़ाई पूरी करने हेतु शहर गया था। उसके गाँव में ज्यादा विद्यालय नहीं थे और कुछ थे भी तो बस माध्यमिक स्तर तक। किस्मत से उसे माध्यमिक स्तर तक पढ़ाई करने की अनुमति थी। वह काफी होशियार थी और अपनी कक्षाओं में हमेशा अव्वल आती थी। दसवीं और 11वीं कक्षा में भी उसने काफी अच्छे अंको से पास की थी और अभी 12वीं कक्षा के परिणाम आने थे। कुछ दिनों बाद परिणाम आते है वह बारहवीं में भी अच्छे अंको से पास हुई थी। चूंकि वह अपनी पढ़ाई पूरी कर चुकी थी, उसकी बड़ी बहन व गाँव की अन्य लड़कियों की तरह उसकी शादी के लिए रिश्ते आने लगे। पिताजी भी अपनी जिम्मेदारी पूरी करना चाहते थे इसलिए उन्होंने भी हाँ कर दी और शादी की बातें शुरू कर दी गई। शादी का नाम सुनकर वह दंग रह जाती है क्योंकि वह आगे पढ़कर अपने परिवार, गाँव व वह अपनी तरह अन्य लड़कियों के लिए कुछ करना चाहती थी।

उसने अपनी इच्छा माँ से जताई, माँ ने बेबस होकर जवाब दिया कि इस समाज में लड़कियों को ज्यादा आजादी नहीं है कि वह ज्यादा पढ़े या अपने फैसले खुद ले। मैं भी पढ़ना चाहती थी मगर मेरे घरवालों ने मेरी माध्यमिक शिक्षा पूरी होने से पहले ही मेरी शादी करवा दी और फिर मैं जिम्मेदारियों में बंध गई। अमिता मायूस होकर वहाँ से चली गई। रात में पिताजी के आने के बाद वह नम आँखों से उनके पास गई और अपने नाम का मतलब पूछा। पिता ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया "अमिता" मतलब "असीम" जिसकी कोई सीमा न हो। वह तुरंत बोली पिताजी फिर आप मुझे इन रुढ़िवादी बेड़ियों में क्यों बाँध रहे रहे है,मेरे सपने को क्यों खत्म कर रहे है। मैं भी भाई के जैसे आगे पढ़ना चाहती हूँ। क्या करोगी पढ़ लिखकर–पिताजी ने पूछा, क्या तुम्हें नौकरी करनी है ? उत्तर देते हुए अमिता ने कहा शिक्षा का मतलब सिर्फ नौकरी करना नहीं होता है। शिक्षा जीवन के हर पहलू को समझने के लिए सूझ–बुझ विकसित करती है, यह सभी मानव अधिकारों सामाजिक अधिकारों, देश के प्रति कर्तव्यों और दायित्वों को समझने में भी हमारी सहायता करता है। शिक्षा हम सभी के उज्जवल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। बहस कुछ देर तक चलती है, अंततः माँ के समर्थन तथा अमिता के प्रयासों से पिताजी आगे पढ़ने की अनुमति दे देते हैं ।

नया शहर, नए लोग, नए सपनों को आँखों में सजाए अमिता शहर आती है। कॉलेज की पढ़ाई शुरू हो जाती है और क्योंकि वह एक अच्छी विधार्थी थी इसलिए उसे उच्च स्तर की पढाई समझने में ज्यादा परेशानी नहीं हो रही थी और वह मन लगाकर पढ़ रही थी। समय बीतता गया और अमिता स्नातक के पहले दो सालो में अच्छा प्रदर्शन करते हुए आखिरी वर्ष में पहुँच जाती है। इस आखिरी साल में कुछ ऐसा हुआ जिसने उसकी जीवन की दिशा बदल दी। एक सुबह अखबार पढ़ते समय उसकी नजर एक शीर्षक, पर जाती है ''अधिक रसायनों से उत्पन्न खाद्य पदार्थों की वजह से हो रहे लोग बिमार" उसे याद आया कि उसने कहीं पढ़ी थी कि खेतों में रासायनिक खादों से अनाज व सब्जियों के ऊपज को बढ़ाया जा रहा है। पर तब उसने ज्यादा ध्यान नहीं दिया, पर इस खबर ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया।

उसने रसायनों से नुकसान पर विस्तार में जानकारी इकट्ठा करना शुरू किया।

उसे पता चला–फसलों में रासायनिक खाद डालने पर खाद में उपस्थित विषप्त रसायन जल में घुलकर सबसे पहले जल को प्रदूषित कर भूमि में उपस्थित केंचुएँ व सूक्ष्म जीवाणुओं को मार देता है। इन जीवाणुओं की मृत्यु से मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है तथा भूमि कठोर होकर बंजर होने लगती है। इतना ही नहीं। रासायनिक खादों में उपस्थित विषप्त रसायन पानी के माध्यम से अन्य खनिजों के साथ फसल के अंदर पहुँच कर फसलों को विषप्त बना देते हैं। जब मनुष्य या अन्य पशु इन फसलों को खाते हैं तो ये रसायन मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालते हैं तथा मनुष्यों के अन्दर तरह–तरह के रोग उत्पन्न करते हैं।

अमिता के गाँव में अधिकतर लोग किसान थे और गाँव में खेती होने के कारण वे पारंपरिक खेती ही किया करते थे, वे ज्यादा रसायनिक पदार्थों का इस्तेमाल जरूरी नहीं समझते थे। इन सब पहलुओं को ध्यान में रखते हुए उसके मन में एक अद्भूत विचार आता हैः– जैविक खेती से उत्पन्न पदार्थों का शहर में व्यवसाय। कुछ दिनों बाद जब छुट्टियों में वह गाँव आती है तो सबसे मिलकर बहुत खुश होती है। शाम में पिताजी के आने के बाद वह अपने विचारों को पिता और भाई को बताती है। सभी को विचार तो बहुत पसंद आया परंतु यह सफल होगा इसकी संभावना न थी। पिता ने थोड़ी देर सोच कर कहा– क्या गांव वाले राजी होंगे? भाई ने कहा, 'इन सबके लिए बहुत पैसों की जरूरत पड़ेगी।' अमिता ने सबके सवालों को ध्यानपूर्वक सुनकर गंभीरता से जवाब दिया हम चाहे तो जरूर हो सकता है।

गांव वाले अपने अनाज, सब्जियों को दूसरे गांव में जाकर बेचते हैं ताकि उन्हें उनकी अच्छी कीमत मिल जाए। मेरे दोस्त के पिता एक अच्छे व्यवसाय हैं उनकी आर्थिक स्थिति भी काफी अच्छी हैं वह हमारी मदद जरूर करेंगे और हम कुछ पैसे बैंक से भी लोन ले लेंगे। ऐसा ही हुआ उसने अपने पिता के साथ मिलकर गांव वाले को समझाने का हर सफल प्रयास किया, समय लगा पर पिता की अच्छी छवि के कारण वे लोगों के विश्वास दिलाने में सफल हो जातें हैं, फिर उसने जैसा कही थी, अपने दोस्त के पिता से बात करती है। इतनी कम उम्र में ऐसे विचारों को सुनकर वे भी खुश हो जाते हैं क्योंकि वह उसी के शहर के थे, उन्होंने वहां के पीड़ित लोगों के अवस्था को महसूस किया था, वे मान जाते हैं और अपने 25 साल की व्यावसायिक अनुभव का ज्ञान देते हैं तथा हर तरह से मदद भी करते हैं। अमिता बैंक से भी कुछ लोन लेती हैं।

खाने के हर प्रकार के वस्तु को एक ही इमारत में बेचने के लिए वह शहर में बड़ी इमारत भाड़े पर लेती है, उसमें काम के लिए गांव से ही कुछ लोगों को चयन करती है। साथ ही वह अपने पढ़ाई को भी जारी रखती है। कॉलेज से विदाई का दिन आता है। उसके लिए अपनी व्यवसाय के प्रचार का यह एक सुनहरा मौका था, शहर के कोने–कोने से लोग कार्यक्रम को देखने आए थे उस दिन उसने अपने कॉलेज के छात्रों की मदद से अपने व्यवसाय का प्रचार–प्रसार किया, जैविक पदार्थ ही बीमारी को कम करने का सबसे आसान तरीका दिख रहा था इसलिए सभी को यह प्रस्ताव पसंद आया और सभी ने समर्थन दिया। व्यवसाय शुरू हुआ क्योंकि यह सबके भले के लिए था, भगवान ने भी समर्थन दिया। पूरे शहर में प्रचार के कारण बीमारी से बचने के लिए लोगों ने वहीं से खाने का सामान खरीदना शुरू कर दिया, दाम भी सामान्य था इसलिए ज्यादा से ज्यादा लोग खरीद पा रहे थे। कहते हैं– हम किसी का भला करेंगे तो भगवान हमारा भला करेंगे। व्यवसाय चल पड़ा, पहले ही महीने पूरे 3 लाख रूपये की कमाई हुई पैसे गाँव के किसानों को भिजवाया गया कुछ बैंक की किस्त में जमा हुए सभी कर्मचारियों को पहली तनख्वाह दी गई। ऐसे ही व्यवसाय धीरे–धीरे बढ़ता चला गया, शहर की स्थिति पहले से अच्छी हुई, अब आसपास के शहरों से भी लोग अनाज व सब्जियां खरीदने आने लगे, गांव वाले को भी अधिक मुनाफा होने लगा और भी वे सब बहुत खुश थे। अमिता ने सूझ–बुझ और अपने योग्यताओं से न सिर्फ अपने घर, परिवार बल्कि गांव के लोगों का भी भला किया। उसके पिता के साथ–साथ उसके गांव वाले को भी उस पर नाज हो रहा था और लोगों ने भी अपनी बेटियों को आगे पढ़ने के इच्छा का समर्थन किया।

> **"हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है**
>
> **-महर्षि दयानन्द"**

सपने

प्रदीप कुमार
लेखाकार

एक बार एक गांव में मोहन नाम का लड़का रहता था, जो कि हमेशा सपने देखता था लेकिन जब वो अपने सपनों की बातें दूसरों से करता तब सब उसका मजाक उड़ाते और उसको समझने वाला कोई नहीं था। सब उससे यही कहते कि तुम्हारे सपने पूरे नहीं हो सकते क्योंकि तुम एक छोटे से गांव में रहते हो।

मोहन को ये सुनकर बहुत ही ज्यादा गुस्सा आया कि क्या हमारे गांव में कोई भी इतना काबिल नहीं है जो हमारे गांव का नाम रौशन का सके। अगर आज तक किसी ने हमारे गांव में सपने नहीं देखे और सफलता नहीं पाई तो कोई बात नहीं, मैं अपने गांव का नाम रौशन जरूर करूंगा।

मोहन के दोस्त ने उसकी बात को समझा और उसे बताया कि हमारे गांव के पास में ही एक पुस्तकालय है, वहाँ जाकर उसे कई बातों की जानकारी मिल जाएगी जो वो जानना चाहता है। उसने पुस्तकालय जाकर देखा तो वहाँ पर अनगिनत किताबें थी और वहाँ एक दम शांति थी और हर कोई बस किताबें पढ रहा था। वह बहुत ही ज़्यादा खुश हुआ और वो हर रोज वहाँ जाता और किताबें पढता, उसके लिए अब कुछ भी करना मुश्किल नहीं था।

लेकिन पुस्तकालय से आते वक्त मोहन ने गांव में कुछ बच्चों को देखा जो की उसको देखकर बहुत ही ज़्यादा खुश हो रहे थे। उसने बच्चों से पूछा कि तुम लोग आखिर इतना खुश क्यों हो तब उनमें से एक बच्चा बोला कि भाई आज आप अपने सपने पूरे करने के लिए इतना दूर जाते हो और आप थकते भी नहीं आप देखना जब हम बड़े हो जायेंगे तो हम भी अपने सपने पूरे करने के लिए उस अनोखी जगह जाएंगे जहाँ से आपने इतना ज्ञान पाया है, अब आपको सफलता मिल कर ही रहेगी।

मोहन हंसकर बोला, सही कहा तुमने, मैं अपना सपना जरूर पूरा करूंगा लेकिन क्या तुम्हें पता भी है कि मेरा सपना क्या है। बच्चों ने कहा, नहीं हमे नहीं पता तब उसने बताया ''मैं अपने इसी गांव को शहर की तरह बनाना चाहता हूँ, जैसे शहर में लोग पढते–लिखते हैं और तरक्की करते हैं वैसे ही हमारे गांव के बच्चे भी तरक्की करेंगे।''

बच्चों ने सवाल पूछा कि आखिर ये होगा कैसे तो मोहन ने जवाब दिया कि जो भी मैंने पुस्तकालय में सीखा है, मैं वो सब कुछ तुम्हे सिखाऊंगा। तुम बस मुझे बता दो कि तुम बनना क्या चाहते हो। बच्चों ने अपने–अपने सपने मोहन को बता दिए अब वह रोज पुस्तकालय जाता और बच्चों के जरूरत की सारी जानकारी एक डायरी में लिख लेता और बच्चों को वो सब कुछ सिखाता जो उसने अपनी डायरी में लिखा है। अब मोहन अपना ही नहीं बल्कि बच्चों के सपनों के लिए भी मेहनत कर रहा था।

कुछ वक्त बाद मोहन ने सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि उन बच्चों के भी सपनों को पूरा किया। ये सब देखकर मोहन के दोस्त ने कहा कि तेरा सपना तो एक महान लेखक बनने का था तो तूने इन बच्चों पर अपना वक्त बर्बाद क्यों किया ?

मोहन बोला, तू समझा नहीं। जब मैंने सपना देखा था– एक महान लेखक बनकर अपने गांव का नाम रौशन करने का और जब मैने सबको अपने सपने के बारे में बताया था तब सबने कहा था कि मुझसे नहीं हो पायेगा, क्यूंकि मैं छोटे से गांव में रहता हूं। आज देखना इस छोटे से गांव के बच्चे ही अपने सपने पूरे करके इस छोटे से गांव के नाम को बहुत बड़ा बना देंगे और देखना जब ये सफलता पा लेंगे तो इनकी सफलता की कहानी मैं खुद लिखूँगा तब मैं भी एक लेखक बन जाऊंगा, तब होगा मेरा सपना पूरा।

सीख

इस कहानी से हमे सीखने को मिलता है कि अगर सफलता पाने के लिए कोई रास्ता न दिखे तो खुद रास्ता बनाना ही बेहतर होता है क्यूंकि सफलता भी उन लोंगो को ही मिलती हैं जो कभी हार नहीं मानते।

एस.एस.सी.

पुरूषोत्तम दास
प्रमण्डलीय लेखा अधिकारी

यह सच्ची कहानी है। 2003 का साल था और एक लंबे समय के बाद कर्मचारी चयन आयोग की स्नातक स्तरीय की वेकेंसी आई थी। और मेरा स्नातक होने के बाद स्नातक स्तरीय यह पहली वेकेंसी थी। मैं शुरू से ही वेकेंसियों के प्रति बहुत जागरूक था, पार्ट वन के बाद से ही। जब स्नातक नहीं हुआ था तब मैट्रिक स्तरीय एल.डी.सी. की परीक्षा में चार बार बैठ चुका था। एल.डी.सी. कहने को तो मैट्रिक स्तरीय था पर जहाँ तक मैं समझता हूँ इसमें स्नातक से नीचे शायद ही कोई क्वालिफाई करता होगा। कारण था कि वेकेंसी ज्यादा रहती नहीं थी और स्नातक बेरोजगार ही लाखों की संख्या में थे। बहरहाल मैंने लगातार चार बार एल.डी.सी. की प्रीलिम्स और मैन्स निकालने में सफल तो रहा लेकिन अंतिम टाइपिंग टेस्ट में छंट जाता था। दस किलो के आस–पास वजनी टाइपिंग मशीन देवघर से इलाहाबाद ले जाने में मेरे पतले हाथों की नस–नड़ियाँ इस कदर खिंच जाती थी कि सेंटर पर मुझसे टाइप होता नहीं था।

जब स्नातक स्तरीय वेकेंसी आई तो मुहल्ले के एक मित्र के मित्र बिट्टू ने पहले ही मुझसे कह दिया कि ऐसा करो एस.एस.सी का फार्म आ ही गया है तुम खर्चा (मिठाई) कर दो। मैंने कहा फार्म भरने के पहले? वह बोला कि तुम्हारा रिजल्ट हो जाएगा, कौन रोकेगा। उसका मुझपर विश्वास देखकर मैं चकित था।

मैं फार्म खरीद लाया और परीक्षा शुल्क के लिए आईपीओ भी। उस समय किसी स्तर की प्रतियोगिता परीक्षा में कोई भी काम ऑनलाइन नहीं होता था सिवाए रिजल्ट प्रकाशन के। फार्म तो मैंने भर दिया लेकिन तभी पता चला कि एस.बी.आई. पी.ओ. की भी वेकेंसी आई हुई है वह भी 700–800 पद के लिए। मैंने उसका फार्म भी लेकर भर दिया। एस.बी.आई. पी.ओ. की परीक्षा उस समय बहुत टफ मानी जाती थी। सालों तैयारी करते हुए जिसका स्टैन्डर्ड आ जाए उसमें से एकाध ही क्वालीफाई कर पाता था। लेकिन तैयारी क्या और स्टैन्डर्ड क्या। सब कोई सब फार्म भरता था जिसका जो हो जाए। एक दिक्कत थी कि मैं साधारण परिवार से था और कुछ अपना चलाने और कुछ घर का हाथ बंटाने के लिए आठ–आठ घंटे ट्यूशन पढ़ाता था। भागम–भाग से अपनी तैयारी कुछ उस तरह से हो नहीं पाती थी फिर भी जो पढ़ता ठोस और मन लगाकर।

जब परीक्षा के लिए एडमिट कार्ड आया तो दोनों परीक्षाओं की डेट आश्चर्यजनक रूप से एक ही थी। पहले तो फार्म साथ–साथ भराया गया अब परीक्षाएं भी एक ही डेट पर। मैं पशोपेश में था किसे दूँ, किसे नहीं। थोड़ा ध्यान दिया तो पाया कि एस.बी.आई. की परीक्षा फर्स्ट सिटींग में थी सेंटर था राजा राममोहन राय सेमीनरी हायर सेकेंडरी स्कूल और एस.एस.सी. की परीक्षा सेकेंड सिटिंग में, साइंस कॉलेज में। एक खजांची रोड में दूसरा अशोक राजपथ पर। दोनों आस–पास थे डेढ़–दो किलोमीटर की दूरी पर। अब उम्मीद जगी कि मैं तो दोनों परीक्षाएं दे सकता हूँ।

परीक्षा के एक दिन पहले मैंने जसीडीह में सुपरफास्ट ट्रेन पकड़ा और देर शाम तक पटना पहुँच गया और कंकड़बाग चला गया अपने दोस्त मुन्ना के पास। रात में वहीं ठहरा और सबेरे सात–साढ़े सात बजे खजांची रोड के लिए निकल गया। वहाँ रिर्पोटिंग टाइम थी नौ बजे। परीक्षा का समय था दस से एक बजे, तीन घंटा। साइंस कॉलेज में एस.एस.सी. की परीक्षा थी दोपहर में दो से चार बजे तक।

एस.बी.आई. पी.ओ. की परीक्षा का मैथ तो ठीक था पर नान–भर्बल रीजनिंग माथे के ऊपर से गुजर रहा था। परीक्षा दी और तसल्ली हो गया इसमें नहीं होगा। लेकिन सर भारी हो चुका था। मैंने बैग टांगी और बुझे मन से साइंस कॉलेज के लिए निकल गया। अशोक राजपथ पर आकर मैनें एक ग्लास मैंगों सैक पिया लेकिन कुछ खाने का मन नहीं हुआ। साइंस कॉलेज में आया तो उसी बेमन से एस.एस.सी का एडमीट कार्ड निकाला और मैन गेट के पास नोटिस बोर्ड में अपना सिटींग पोजीशन देखा। यह सामने वाले एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक में था। समय होते ही अपने रूम में जाकर बैठ गया।

इनविजीलेटर ने उत्तर पुस्तिका दी और मैं रोल नंबर वगैरह भरकर प्रश्न पत्र के लिए बैठ गया। जब प्रश्न पत्र के लिए घंटी बजी तो उस समय क्या देखता हूँ कि एक लड़का बदहवासी से हॉल में घुसा और इनविजीलेटर से कुछ बातें करने लगा। उसे देखकर लगा कि कितना लापरवाह लड़का है, इतनी देर से कोई आता है। इसके बाद वह लड़का एक–एक बेंच पर रोल नंबर देखते हुए मेरे ठीक सामने आकर रुक गया। मैं अगर कुछ भूल नहीं कर रहा हूँ तो वह बातचीत कुछ इस प्रकार थी–

लड़का– "यह सीट मेरा है।"

मैं– "पागल है क्या जी?? मेरा सीट है देखो मेरा रोल नंबर।" मैंने टेबल पर चिपकी पर्ची उसे दिखाते हुए कहा।

लड़का– "रोल नंबर क्यों देख रहे हैं टिकट नंबर देखिए न। सिटींग तो टिकट नंबर पर होता है न!"

एस.एस.सी. की परीक्षा के एडमीट कार्ड पर दो नंबर होते थे एक था रोल नंबर जो अंत तक स्थायी बना रहता था और दूसरा टिकट नंबर जिसपर बैठने की जगह निर्धारित होती थी।

अब मेरा माथा ठनका, सही तो। एक क्षण के लिए मैनें अपना रोल नंबर देखा तो वह टेबल के टिकट नंबर से मेल खा रहा था और मेरा टिकट नंबर अलग था, मतलब यह मेरा सीट था ही नहीं। फिर मेरा सीट कहाँ है? एक क्षण के लिए मुझे दिन में तारे दिख गए और मेरे सारे सपने मानो हवा हो गए। मन–ही–मन बिट्टू से कह रहा था तुम मिठाई खिलाने की बात कर रहे थे, मेरा इग्जाम तक नहीं हो पाया।

मैं– "फिर मेरा सीट कहाँ है??"

लड़का बोला– "आप जाकर मैन गेट पर देखिए ना।"

मैन गेट मतलब बाहर........ तब तक एडमिनीस्ट्रेटीव ब्लॉक बंद कर दिया गया था जैसा कि इस तरह के परीक्षा में होता है। मैं कमरे से निकलकर बाहर की ओर भागा और बंद दरवाजे के दोनों तरफ कोई नहीं था। मैं एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे और दूसरे दरवाजे से फिर पहले दरवाजे की तरफ आया तो एक गार्ड नजर आया। मैंने उससे प्रार्थना की कि मैं गलती से इस ब्लॉक में चला आया हूँ। उसने थोड़ी निराशा से मेरी ओर देखा फिर दरवाजा खोल दिया। मैं भागा मैन गेट की ओर.... वहाँ नोटिस बोर्ड को दो बार बारीकी से देखा और अपना टिकट नंबर मिलाया। मेरा सेंटर था फिजीक्स ब्लॉक जो मैन गेट से लगभग तीन–चार सौ मीटर दूरी पर था। ये दूरी मैंने दौड़कर पूरी की। फिजीक्स ब्लॉक मेरे सामने था, मैं अपने कमरे में गया। सभी निगाहें मेरी तरफ थीं, मैं उस समय जो उस लड़के के लिए सोच रहा था वही ब्याज सहित लौटने की बारी थी। मैं दो घंटे के इग्जाम में पूरे दस मिनट लेट था।

जब परीक्षा देकर बड़ी संख्या में अभ्यर्थी प्लेट फार्म पर जमा थे तो सब अपने स्कोरिंग के बारे में बातें कर रहे थे। उनमें से अधिक–से–अधिक कोई 135 या 140 होने की कह रहा था, मेरा आंकड़े 165 बयां कर रहे थे। जब इसी परीक्षा का मैन्स लिखा तो मैंने दो घंटे का मैथ्स का पैपर एक घंटे और पांच मिनट में ही पूरा कर लिया। मैंने पहली ही प्रयास में एस.एस.सी क्रैक कर लिया था और मेरा रैंक था 53।

मैं आज जब उस घड़ी को याद करता हूँ तो सोचता हूँ, मैं गलत जगह पर बैठा था सही है, लेकिन वो लड़का उतनी देर तक कहाँ था। और क्या उससे भी वही भूल हुई थी जैसी की मुझसे। बात चाहे जो भी रही हो दोनों की गलतियों का टकराने का परिणाम सुखद रहा था।

> **"राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी भी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं हैं**
>
> **-अनंत गोपाल"**

वामिस

पुरूषोत्तम दास
प्रमण्डलीय लेखा अधिकारी

बात 2016 अंतिम की है। कार्य प्रमण्डलों के लेखा पदाधिकारियों को लेखा प्रक्रिया के डिजिटलीकरण के प्रशिक्षण के लिए चिट्ठियां आनी शुरू हो गई थी। पुराने पैटर्न पर जो लेखा पद्धति थी उसमें भर–भरकर विसंगतियां जगजाहिर थी। या तो महालेखाकार को गुणवत्तापूर्ण लेखा नहीं मिलता था या इतनी देर से प्राप्त होता था कि महालेखाकार (ए.जी.) कार्यालय के मासिक प्रतिवेदन में शामिल नहीं हो पाता था। और इससे मुख्यालय (सी.ए.जी.) में मासिक लेखा संकलन को लेकर राज्य की किरकिरी होती थी और राज्य स्तर पर उनके अधीनस्थ महालेखाकार कार्यालय को डी. ओ. लैटर प्राप्त होना आम बात होती थी। नियंत्री पदाधिकारियों की तरफ से हर जोर कोशिश की जाती ताकि लेखा सही–सही और समय पर प्राप्त हो लेकिन इसका खास असर हुआ नहीं जान पड़ता था।

उच्च अधिकारियों की क्लास लगती और वे इसे अपने नीचे तक पहुंचा देते, पर नतीजा वही रहता था– ढाक के तीन पात। लेखा के एक ही फार्मेट को कार्य प्रमण्डलों द्वारा अलग–अलग तरीके से भरा जाता था, जो महालेखाकार कार्यालय के लिए अलग गले की हड्डी बनता था। लेखे में एकरूपता वाली बात नहीं होती थी।

बहुत सोच–विचार के बाद सरकार ने अपने लोक निर्माण विभागों की लेखा प्रणाली को ऑनलाइन करने का निर्णय लिया। अलबत्ता सरकार पहले बिलिंग व्यवस्था को ऑनलाइन करने को लेकर प्रयासरत थी लेकिन जब महालेखाकार से विमर्श किया गया तो यह बात सामने आने लगी कि बिलिंग से पहले अकाउंट्स को ऑनलाइन करने की आवश्यकता है। फिर क्या था सरकार की तरफ से सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई–गर्वनेंस विभाग ने सॉफ्टवेयर तैयार करने के लिए सी–डैक से करार किया और कुछ समय बाद वामिस को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में कुछ चुनिंदा कार्य प्रमण्डलों में लागू कर दिया गया। वामिस सी–डैक द्वारा तैयार किया गया झारखण्ड सरकार का अकाउंट्स मॉडल है। प्रायोगिक तौर पर सफल रहने के बाद राज्यस्तर पर इसे लागू करने के लिए ट्रेनिंग की अधिसूचना निकाल दी गई।

ट्रेनिंग बैच वाइज दी जाती थी। कैशियर, लेखा पदाधिकारी और कार्यपालक अभियंता को साथ में ट्रेनिंग के लिए बुलाया जा रहा था। यह भी निर्देश था कि ट्रेनी अपने साथ लैपटॉप साथ लेकर आए। लैपटॉप कितनों के पास होती थी, जो थोड़े लाए भी थे उन्होंने ट्रेनिंग के दौरान इसे खोलना भी न चाहा। ट्रेनिंग का पहले ही रोज से बुरा हाल था जितनी लोग उतनी बातें बनाते। ट्रेनिंग बचकाना सा लगता तो यह भी कहा जाता कि बाहरी नवसिखीए राज्य के अनुभवी पदाधिकारियों को ट्रेनिंग देंगे। कहना न होगा स्टेट के ट्रेनियों ने पहले ही ट्रेनिंग सेशन में कह दिया कि यह कभी लागू नहीं होगा। कौन करेगा, मामूली कुबेर तो ऑपरेट होता नहीं है बार–बार फंस जाता है। लागू हो भी जाए तो राज्य में इसके मुताबिक इनर्फास्ट्रक्चर कहाँ? ऑफिस के पास ढंग का कम्प्यूटर तक नहीं। कितने स्टाफ ऐसे थे जिन्हें कम्प्यूटर की सामान्य जानकारी भी नहीं थी, बकौल उनके उन्हें कम्प्यूटर का 'सी' भी नहीं पता था। नेट की स्थिति का अलग रोना था। फिर लौट के बुद्धू घर को आए वाली बात न हो जाए।

चुनौतियां कई थी पर ट्रेनर कहीं गंभीर थे, सरकार के लिए भले बाहरी और नए हो पर इरादों में परिपक्व और मजबूत थे। परिणाम हुआ कि कुछ ने ही सही पर ट्रेनिंग को गंभीरता से लेना शुरू किया। जो कुछ ट्रेनीज अपने साथ लैपटॉप वगैरह लेकर आए थे उन्होंने वहीं वामिस के प्रोटोटाइप आईडीज पर अभ्यास शुरू किया। ट्रेनर शांति से उनका डाउट्स क्लियर कर उन्हें आगे बढ़ाते। आगे टेलीफोनिक और मेल के जरिये सहायता प्रदान देने के लिए वामिस हेल्पडेस्क का गठन कर दिया गया जिसमें सी–डैक के दोनों ट्रैनर्स श्री महावीर तिर्की और श्री सुशांत नायक थे।

पहले–पहल वामिस पर अकाउंट्स की तैयारी को लेकर ए.जी. ऑफिस बहुत लिबरल रहा जिसके पाले पड़

जाए, वह ऑनलाईन अकाउंट्स तैयार करे जिसको दिक्कत आती हो तो पुराने पैटर्न पर ही सही। उदारवाद महान चीज होती है, कोई चीज जबरदस्ती किसी पर थोप दी जाए तो सामनेवाला अकड़ जा सकता है लेकिन अगर उदारतापूर्वक आग्रह किया जाए तो वह सही रास्ता चुन लेता है।

पहले महीने कुछ तीन सौ कार्य प्रमण्डलों में से आठ–दस से ऑनलाइन अकाउंट्स प्राप्त हुआ। आंशिक सफलता हाथ लगी और मशीनरी उत्साहित हुई। ए.जी. ऑफिस ने लेखा पदाधिकारियों को फिर ताकिद किया। परिणाम रहा कि दूसरे महीने भी अपेक्षित सुधार हुआ। अब ए.जी. ऑफिस के स्ट्रिक्ट होने की बारी थी। माह दिसम्बर 2016 से अकाउंट्स का ऑनलाईन सबमिशन मैंडेटरी कर दिया गया। एकबार मैंडेटरी होने की बारी थी पूरा–का–पूरा महकमा हलकान हो उठा। लोग इससे पूछते, उसको बुलाते, किसी तरह किनारा लगे। वामिस हेल्पडेस्क को हर दूसरे–तीसरे मीनट पर कॉल आना शुरू हुआ। लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया और एक–एक को सहायता करते जाते।

झारखण्ड एक बड़ा राज्य था और इतने बड़े राज्य में सारे कार्य विभागों की ऑनलाईन समस्याओं को मॉनिटर कर पाना कतई आसान काम नहीं था। ऐसे में हेल्पिंग हैंड बनकर आगे आए डी.ए. कैडर के 2009 बैच के अधिकारी परमानंद जी। परमानंद जी सी.आई.एस.एफ. से आए थे, शांत रहकर अपना काम करके जाने वाले आदमी थे। उनके पास थी, माइक्रोमैक्स की टैबलेट इग्नाईट और उन्होंने उसी टैबलेट पर जम कर वामिस का अभ्यास किया था, इतना की टैब का कीपैड तक घीस गए। जो लोग वामिस में फंस रहे थे उनके लिए परमानंद जी ने हेल्पलाइन का काम करना शुरू किया। और आगे–पीछे ही सही झारखण्ड राज्य के कार्य प्रमण्डलों का मासिक लेखा वामिस के माध्यम से पहली बार ऑनलाईन हो रहा था।

इस तरह जब अकाउंट्स का ऑनलाईन एक्सेपटेंस–रिजेक्शन शुरू हुआ तो फिर से बात उठी ऑनलाईन बिलिंग की। तत्कालीन मुख्य सचिव महोदया ने विभागों की संयुक्त समीक्षा बैठक बुलाई। यह उन्हीं की ऊर्जा और कौशल के बदौलत था, झारखण्ड में ऑनलाईन अकाउंटिंग सिस्टम वामिस का आगाज हो पाया था।

जैसा कि आम तौर पर होता आया था, ऑनलाईन बिलिंग पर विभागों की ओर से टाल–मटौल होने लगा। कहा जाता है कि कार्यालयों के पास अपना खुद का कम्प्यूटर नहीं है, दूर–दराज क्षेत्र में इंटरनेट की सुविधा नहीं रहती है। वर्षों पुराने डेटा को एकाएक ऑनलाइन करना दुरूह बताया जा रहा था। पर इन सब से बढ़कर यह अपुष्ट बात थी कि अभियंत्रण सम्वर्ग को बिल डेटा सरेआम हासिल होने देना नागवार लगा था।

कम्प्यूटर नहीं है कि बात उठने पर मुख्य सचिव ने तत्काल इसे कार्यालयों को उपलब्ध कराने का आदेश दे दिया। अंततः कम्प्यूटर तो नहीं पर टेबलेट वितरण पर मुहर लगी और राज्य में टेबलेट वितरण की तारीख को ही वामिस की ऑनलाइन बिलिंग शुरूआत करने की लांचिंग डेट रखने की घोषणा कर दी गई। माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा टेबलेट वितरण के साथ ही राज्य में ऑनलाईन बिलिंग की भी औपचारिक शुरूआत हो गई। यह तय कर लिया गया कि लांचिंग डेट के बाद से कोई बिल ऑफलाइन नहीं लिया जाय।

वामिस हेल्पडेस्क की अग्नि परीक्षा तो अब होनी थी। ऑनलाईन बिलिंग के लिए एस्टीमेट की सॉफ्ट कॉपी (बी.ओ.क्यू. टेमप्लेट्स) को अपलोड करना खासा जटिल था। और अपलोड होने के बाद इसे कई आई.डी. से गुजरना पड़ता था। ऐसे में एक वृहत पी.डब्ल्यू.डी. में पदस्थापित लेखा पदाधिकारी संजय सर ने परमानंद जी से बात की।

संजय सर– ''परमानंद जी, क्या किया जाए, हमारे यहाँ तो किसी को बिल ऑनलाईन करने नहीं आता है। पुराने पैटर्न पर बिल पास हो सकता है अभी।''

परमानंद जी–''नहीं सर, बिल का रेफरेंस नंबर दीजिएगा तभी कंट्रोल नंबर जेनेरेट होगा और भुगतान होगा। आपको क्या दिक्कत हो रहा है सर कहिये हम कोशिश करते हैं।''

संजय सर– ''आप बता दीजिएगा।''

परमानंद जी– ''हाँ क्यों नहीं।''

तो इस प्रकार संजय सर को परमानंद जी के सौजन्य से यह पता चला की बिल ऑनलाइन कैसे हो। फिर धीरे–धीरे

यह सबको पता चला कि परमानंद जी को पता है बिल कैसे ऑनलाइन किया जाए। फिर क्या था, परमानंद जी का हेल्पलाइन एक बार फिर खुला था। जो जहाँ फंस–जा रहा था तुरंत परमानंद जी को फोन लगाया जाता। परमानंद जी भी पूरे धीरज से सबको मदद करते जाते। परमानंद जी के साथ एक बात थी कि बिना लाग–डाट के सबको मदद किये जाते थे वह न अधीर होते थे, न खिजते थे।

तो इस प्रकार तमाम उतार–चढ़ाव के बाद भी झारखण्ड में भी अकाउंट्स और बिल के ऑनलाइन युग की शुरूआत हुई। सिर्फ ऑनलाइन ही नहीं हुआ बल्कि इसमें एकरूपता भी आई। यह वामिस की ही देन कही जा सकती है कि बड़ी संख्या में सरकारी कर्मियों में कम्प्यूटर के प्रति जागरूकता पैदा हुई। इक्का–दुक्का मामले को छोड़ दिया जाये तो वामिस लागु होने के बाद लगभग नब्बे–पंचानबे फिसदी लेखे महालेखाकार को समय पर प्राप्त होने लगे हैं। राज्य के फाईनेंस एंड विनियोग लेखा के लिए ए.जी. को डेटा अब बास्केट के जरीये फिंगर टीप पर प्राप्त होना संभव हो गया है, जिसके लिए पहले बहुत उबाऊ मैनुअल इंट्री का सहारा लेना पड़ता था।

राज्य में वामिस की सफलता को देखते हुए पड़ोसी राज्य बिहार और उत्तर प्रदेश ने भी इस माड्युल को अपनाने की इच्छा जाहिर की है। वामिस में अब भी कुछ कमियां है जैसे यदा–कदा इसका सर्वर स्लो पड़ जाता है, इलेक्ट्रॉनिक मेजरमेंट की शुरूआत होनी शेष है लेकिन उम्मीद है कि आने वाले समय में यह दूर की जाती रहेगी।

वामिस टीम के अधिकारी आज भी इस डिजिटल अकाउंट्स और बिलिंग लागू हो पाने के पीछे महालेखाकार कार्यालय के अधिकारियों श्री बी. सी. बेहेरा सर, श्री भास्कर मजूमदार सर, श्री अविनाश सर और श्री आशुतोष सर सहित तमाम सद् प्रयासों का आभार मानती है लेकिन यह भुलाया नहीं जा सकता कि इस मुहिम के शुरूआत उनकी समर्पित और दक्ष टीम के द्वारा हुई और इसके लिए उन्होंने पेशेवर रुख अपनाया और आगे चलकर परमानंद जी जैसों ने इसे लागू करवाने की दिशा में ईमानदार प्रयास किया।

> **राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती हैं**
>
> -बालकृष्ण शर्मा

जिंदगी की नई शुरूआत

कृष्ण लाल
लेखाकार

मधुमक्खियों की गूंज और फूलों की खुशबू के बीच बसा एक छोटा सा गांव था – सुंदरपुर। यह गांव अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांतिपूर्ण वातावरण के लिए जाना जाता था। गांव में छोटे–बड़े हर घर के आंगन में रंग–बिरंगे फूल खिले होते थे, और हर किसी के चेहरे पर सुकून की मुस्कान होती थी। इसी गांव में एक युवा लड़का रहता था जिसका नाम था – अनुदीप।

अनुदीप एक साधारण लड़का था, पर उसकी सोच और सपने बहुत बड़े थे। उसके पिता एक किसान थे और मां गृहिणी। अनुदीप ने अपनी प्राथमिक शिक्षा गांव के स्कूल से प्राप्त की थी। पढ़ाई में वह हमेशा अव्वल आता था। उसकी मेहनत और लगन ने उसे गांव का गौरव बना दिया था।

सुबह होते ही अनुदीप का दिन शुरू हो जाता था। वह सबसे पहले अपने छोटे से बगीचे में जाता था, जहां उसने कई प्रकार के फूल और पौधे लगा रखे थे। यह बगीचा उसकी मेहनत और प्यार का नतीजा था। हर पौधा उसकी देखभाल से खिलखिलाता रहता था। बगीचे में समय बिताने के बाद, वह गांव के स्कूल में पढ़ाने जाता था। वह बच्चों को पढ़ाने में बेहद रुचि रखता था और गांव के लोग उसे बहुत पसंद करते थे।

अनुदीप का जीवन साधारण था, पर उसकी एक चाहत थी – वह गांव के बच्चों को बेहतर शिक्षा देना चाहता था। गांव में सुविधाओं की कमी थी, स्कूल में पर्याप्त किताबें नहीं थीं और पढ़ाई का माहौल भी ठीक नहीं था। अनुदीप ने सोचा कि अगर उसे मौका मिले, तो वह गांव के लिए कुछ बड़ा कर सकता है।

एक दिन, अनुदीप को खबर मिली कि उसके पिता बीमार पड़ गए हैं। उनका इलाज गांव के छोटे से अस्पताल में संभव नहीं था। अनुदीप और उसके परिवार को उन्हें शहर के बड़े अस्पताल ले जाना पड़ा। वहां के डॉक्टरों ने बताया कि उनके पिता को किडनी की बीमारी है और उनका जल्द से जल्द ऑपरेशन करना पड़ेगा। अनुदीप और उसके परिवार के पास इतनी बड़ी रकम नहीं थी कि वे ऑपरेशन का खर्च उठा सकें। अनुदीप बहुत चिंतित हो गया। वह जानता था कि उसे कुछ करना होगा।

अनुदीप ने गांववालों से मदद मांगी। गांव के लोग उसकी स्थिति को समझते थे और उसके परिवार की मदद के लिए आगे आए। गांववालों ने मिलकर पैसे जमा किए और अनुदीप के पिता का ऑपरेशन करवाया गया। ऑपरेशन सफल रहा, लेकिन कुछ समय बाद उनके पिता की स्थिति फिर से बिगड़ने लगी। अनुदीप और उसके परिवार ने पूरी कोशिश की, लेकिन उनके पिता को बचा नहीं पाए। उनके निधन ने अनुदीप और उसके परिवार को गहरे शोक में डाल दिया।

इस कठिन समय ने अनुदीप के दिल में गांववालों के प्रति आभार और भी बढ़ा दिया। उसके पिता की मृत्यु ने उसे और भी मजबूत बना दिया। उसने ठान लिया कि वह अपने पिता के सपनों को पूरा करेगा और गांव के लिए कुछ बड़ा करेगा।

अनुदीप ने तय किया कि वह गांव में एक ऐसा संस्थान बनाएगा, जहां लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और शिक्षा मिल सके। उसने गांव के कुछ पढ़े–लिखे युवाओं से संपर्क किया और उन्हें अपने विचार के बारे में बताया। सभी ने उसके विचार का समर्थन किया और उसके साथ काम करने के लिए तैयार हो गए।

अनुदीप ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एक योजना बनाई। उन्होंने गांव के लोगों से चंदा इकट्ठा किया और सरकारी सहायता के लिए आवेदन किया। उन्होंने गांव में एक छोटे से स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की। गांव के लोगों ने भी उनकी मदद की और अपनी मेहनत से स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण किया।

स्कूल में बच्चों को आधुनिक शिक्षा देने के लिए योग्य शिक्षकों को नियुक्त किया गया। बच्चों के लिए नई किताबें, स्टेशनरी और खेल के सामान का इंतजाम किया गया। स्वास्थ्य केंद्र में एक योग्य डॉक्टर और नर्स की नियुक्ति की गई, जहां गांव के लोग मुफ्त में अपना इलाज करा सकते थे।

अनुदीप और उसके दोस्तों की मेहनत रंग लाई और गांव के लोगों को बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं मिलने लगीं। बच्चे अब स्कूल में खुशी–खुशी पढ़ने जाते थे और उनकी पढ़ाई में सुधार होने लगा। गांव के लोग भी अब स्वास्थ्य केंद्र में अपना इलाज करवा सकते थे और उन्हें शहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती थी।

अनुदीप की इस पहल ने उसे गांव का हीरो बना दिया। गांववाले उस पर गर्व महसूस करने लगे और उसकी तारीफ करने लगे। अनुदीप की मेहनत और सपने ने उसे न केवल अपने जीवन में सफलता दिलाई, बल्कि पूरे गांव का भविष्य भी बदल दिया। उसने साबित कर दिया कि अगर इरादे मजबूत हों और हौसला बुलंद हो, तो कोई भी सपना सच हो सकता है।

समय बीतता गया और सुंदरपुर में खुशहाली और समृद्धि का दौर शुरू हो गया। गांव के बच्चे अब बेहतर शिक्षा पा रहे थे, लोग स्वस्थ हो रहे थे और गांव का विकास हो रहा था। अनुदीप और उसके दोस्तों की मेहनत और ईमानदारी ने सुंदरपुर को एक नई पहचान दी थी।

सुंदरपुर अब सिर्फ एक गांव नहीं था, यह उन लोगों की उम्मीदों और सपनों का प्रतीक बन गया था, जिन्होंने मेहनत और लगन से अपने सपनों को साकार किया था। और इस प्रकार, अनुदीप की जिंदगी की नई शुरुआत ने उसे और उसके गांव को एक नई पहचान और गौरव दिलाया।

> **भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिंदी है**
>
> -नलिन विलोचन शर्मा

सोशल मीडिया

प्रतीक जैन
सहायक लेखा अधिकारी

सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार है, जिससे कोई भटक सकता है, तो कोई सशक्त बन सकता है, अगर पिछले दशक में किसी एक चीज ने आम आदमी को सबसे ज्यादा सशक्त किया है तो वो सोशल मीडिया ही है। हम सभी को बदलाव को अपनाना चाहिए और ये बदलाव तो हमारे जीवन का अहम बदलाव था। पुराने जमाने में आम आदमी की अपनी कोई आवाज नहीं थी। लोगों तक आपनी बात पहुँचाने का जरिया सिर्फ टी.वी. एवं रेडियो था और वह भी कुछ लोगों की पहुँच में ही था।

आज आप अपने जीवन में भले ही कुछ बने न बने फिर भी दुनिया के सामने आप अपनी बात रख सकते हैं जो लाखों लोगों तक पहुँच सकती है परन्तु सोशल मीडिया के इस्तेमाल के दौरान हमें कुछ बातों का ध्यान जरूर रखना चाहिए।

अव्वल तो यह है कि अगर आप फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल प्लेटफार्म का प्रयोग करते है, तो आपको हर किसी के अपडेट्स की जरूरत नहीं है। हाँ, घनिष्ठ मित्र जिन्हें आप व्यक्तिगत तौर पर जानते है उनके अपडेट्स फिर भी देखे जा सकते है, न चाह कर भी हम दुनिया भर के लोगों की जीवन चर्चा देख कर प्रभावित होते है, कोई भी इंसान अपने जीवन के सर्वोत्तम क्षणों की सर्वोत्तम तस्वीरें ही पोस्ट करके दिखाते हैं वे कितने सुखी है? जबकि उनका सुख हमारे दुख का कारण बन जाता है, हम अपने जीवन शैली की तुलना उनसे करके दुःखी महसूस करने लगते हैं। हैप्पी अपडेट्स हमें नाहक परेशान करते हैं जबकि हमें क्या फर्क पड़ता है कि कोई अपने निजी जीवन में क्या कर रहा है।

कुछ लोग व्हाट्सप्प पर ढेर सारे ग्रुप्स बना कर रखते हैं जैसे– स्कूल का, कॉलेज का, ऑफिस का, परिवार का, गली मुहल्ले का, सोशायटी वालों का, आपका दिमाग इतनी चीजों में उलझ जाता है मानो आप स्टेज पर खड़े हो और हर कोई आपको देख रहा हो। स्वनिर्माण हेतु जिस एकांत की जरूरत होती है वह कोसों दूर चला जाता है। हमें पता भी नहीं चलता कि यह भीड़ आप पर कितना दबाव डाले रखती है?

मेरे पिताजी 15–20 सालों बाद अपने मित्र से मिले तो उन्हें पता नहीं था कि इन सालों के दौरान उनका मित्र क्या करता रहा। इससे न तो पिताजी और न उनके मित्र के जीवन में कोई फर्क पड़ा। वो कुछ भी करते आये हैं, दोनों की जीवन सहज–वृति से चला। जिन्हें हम जानते भी नहीं उनके जिंदगी में झांकना या ब्यौरा रखना भी बेवजह है। यह हमारे मन में तुलनात्मकता को जन्म देकर हमें दुःखी बनाये रखती है। आपका करियर उनसे बेहतर है या नहीं? आपके पार्टनर उनके पार्टनर से काबिल या सुंदर है या नहीं? आपके पास उनके जैसी गाड़ी है या कमतर है? आप अपनी छुट्टियाँ कहाँ–कैसे बिताते हैं? सोशल मीडिया इन सब मामलों में कभी भी न खत्म होने वाली एक अंधेरी सुरंग है। दूसरों की जिंदगी में झांकने वाली प्रवृति पूरी जिंदगी आपका पीछा नहीं छोड़ती। मन की शांति सबसे अहम है। कोई भी ऐसी चीज जो मन का शांति आपसे छीन ले तो उसको अपने जीवन से दूर कीजिए।

सोशल मीडिया पर एक और खराब आदत आपको लग जायेगी वो है अपनी हर चीज को दूसरे लोगों से अप्रुव कराने की

आदत। आप ऐसे पोस्ट करेगें जिन पर लोग लाइक्स या कमेंट करें। आपको अहमियत दें। आप अपनी ऐसे फोटो ही डालेगें जिसमें आप सर्वश्रेष्ठ दिख रहे हो। इससे न तो आपका व्यक्तित्व निर्माण होगा और न चरित्र निर्माण।

भले ही आपने सोशल मीडिया पर हजारो दोस्त बना रखें होगें पर इनमें से कितने जरूरत पड़ने पर आपकी मदद के लिए आयेगें। आप जबरदस्ती उन्हें दोस्त बनाते हैं, फिर उनसे बातचीत में अपना समय और ऊर्जा खर्च करते हैं। आकर्षण कम होने पर आप नये दोस्त बनाते हैं। किसी अनजान के पीछे समय जाया क्यूं करना? आप अपने परिवार को वह समय और ऊर्जा दे सकते हैं, जो उसके सच्चे अधिकारी है।

आप राजनीतिक, धार्मिक पोस्ट पर निंदा, ईर्ष्या, कुवचन बोलकर अपना समय नष्ट करते हैं। विचार न मिलने पर आप उनको आप शब्द बोलते हैं, ट्रोल करते हैं, जज करते हैं, सफल लोगों में बुराई खोजते हैं, नुक्ता चीनी करते हैं। सोशल मीडिया का यह प्रपंच आपको मनोवैज्ञानिक तौर पर बर्बाद करता है।

अतः सोशल मीडिया का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल अनिर्वाय है, जो आपको उत्पादक व सकारात्मक बना सके। वह आपके जीवन में दुःख न भरे। सोशल मीडिया को प्रेरणा, शिक्षा, कला इत्यादि के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्ति का साधन बनाया जा सकता है, जो आपको निजी तौर पर विकास के पथ पर अग्रसर कर सकता है। सिर्फ मनोरंजन या टाइमपास के लिए सोशल मीडिया पर समय बिताना आत्मघाती कदम है। जबकि सकारात्मकता के तरफ इसका प्रयोग आपको इंटरनेट के युग में जीवित और एक्टिव बनाये रखेगा और आप इस गहन जाल में भी बिना भटके जीवन का लुत्फ ले पायेंगे।

> **हिंदी की एक निश्चित धारा है, निश्चित संस्कार है**
>
> -जैनेन्द्र कुमार

मित्रता

संजीव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
का. प्र.नि.ले.प. (केन्द्रीय)
हैदराबाद, शाखा भुवनेश्वर

मित्रता एक वरदान है। जिस व्यक्ति का कोई भी मित्र नहीं है, वह खुशहाल जीवन नहीं जी सकता है। पूरे विश्व में अगस्त के पहले रविवार को फ्रेंडशीप डे के रूप में मनाया जाता है। मित्रता के बारे में अरस्तु ने कहा है– "मित्र क्या है? दो शरीरों में निवास करने वाली एक आत्मा।" पौराणिक काल में श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता का मिशाल दिया जाता है। महान दार्शनिक अरस्तु ने कहा था– "मानव एक सामाजिक प्राणी है।" पृथ्वी पर जी रहे जितने भी इंसान है, वे एक– दूसरे पर आश्रित हैं। विश्व के सभी राष्ट्र, चाहे वह विकसित हो या विकासशील, सभी एक–दूसरे से मैत्री संबंध रखना चाहते हैं। यहाँ तक कि प्रकृति के सभी जीव–जन्तु आपस में मेल–भाव रखना पसंद करते हैं।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहु रीति।
बिपति–कसौटी जे कसे, सोई सांचे मीत।।

सुविख्यात कवि रहीम जी द्वारा रचित यह दोहा के माध्यम से बताया गया है कि जब व्यक्ति के पास संपत्ति होता है तब उसके अनेक सगे–संबंधी तथा मित्र बनते हैं, उसके समीप आतें है, पर विपत्ति के समय में जो आपका साथ दें, वही सच्चा मित्र है।

सुविख्यात कवि रहीम जी द्वारा एक और चर्चित दोहे में कहा गया है।

टूटे सुजन मनाइए, जो टे सौ बार।
रहिमन फिर–फिर पोइए, टूटे मुक्ताहार।।

मतलब सच्चे मित्र जितनी बार आपसे रूठे उन्हें मना लेना चाहिए ठीक उसी प्रकार जैसे मोतियों की माला के टूट के बिखर जाने पर हम उन्हें बार–बार पिरोते हैं क्योंकि वह मूल्यवान है, ठीक उसी प्रकार सच्चे मित्र मूल्यवान होते हैं और उन्हें नहीं खोना चाहिए।

पौराणिक कथाओं में श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता, कर्ण और दुर्योधन की मित्रता हमें अच्छे मित्र का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। आम जनता, उद्योग जगत, बॉलीवुड या खिलाडियों की दुनिया हो, सभी क्षेत्र में मित्रता के मिसाल दिए जाते हैं। आज भारत विश्व गुरू की ओर अग्रसर है। अतः निश्चित रूप से भारत को अन्य देशों के साथ मित्रवत व्यवहार करना चाहिए।

मानव के आयु के आधार पर मुख्यतः तीन अवस्था होते हैं– बाल्य अवस्था, युवा अवस्था व प्रौढ़ अवस्था। इन तीनों अवस्थाओं में इंसान के मित्र अलग–अलग होते हैं। अपवाद के रूप में ही कुछ ऐसे मित्र होते हैं जो तीनों अवस्था में मित्रता अंत तक निभाए रखते हैं। कहा जाता है भौतिकवादी युग में लोग मित्रता का अर्थ ही पलट दिए हैं। लोग सिर्फ अपनी जरूरतों के हिसाब से मित्रता रखते है या मित्र होने का ढ़ोंग रचते हैं। यह सही नहीं है। मित्रता का व्यापक अर्थ है–दिल से दोस्ती निभाना, एक दूसरे को समझना, एक के प्रति दूसरे का कल्याणकारी सोच, आचार–व्यवहार में संतुलन बनाने में सहयोग, विकास के शिखर को छुने में आपसी सहयोग आदि।

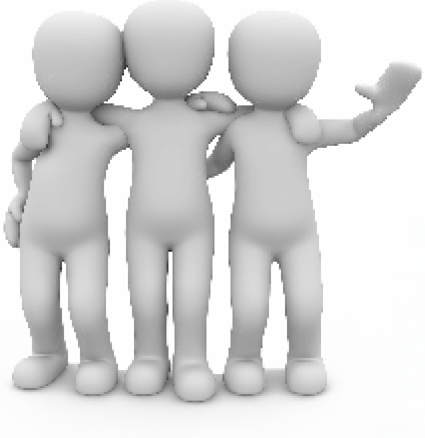

मित्रता के संदर्भ में गुलजार जी ने कहा है– कुछ लोग बिना किसी रिश्ते के रिश्ते निभाते हैं। शायद वे दोस्त कहलाते हैं।

पुरानी कहावत है कि दो मित्र एक–दूसरे के लिए जान की बाजी तक लगा देते हैं। यह धारणा हमें भूलानी होगी। क्योंकि आप रिश्तों में बंधें हैं।

आपके माता–पिता है, आपका परिवार है, आप पारिवारिक बंधनों से जुड़े हुए हैं। अतः आपका ये उत्तरदायित्व होता है कि आप अपने परिवार के सदस्यों का ख्याल रखें। अगर आप अपने मित्र के लिए जान दे देंगे तो आपके परिवार का देखभाल कौन करेगा। हाँ, यह कह सकते है कि जब तक जान है मित्र की भलाई के लिए हमेशा तैयार रहूँगा।

मित्रता एक कला है, जिसे हर किसी को नहीं आता है। कहते हैं कि आप कितने भी मिलनसार हो, लेकिन एक अच्छा व सच्चा मित्र बनाने के लिए आपको लाखों में से कोई एक ही मिलेगा। जो आपको और आपकी भावनाओं को समझ पाएगा। मित्रता आप पुस्तकों से भी कर सकते हैं। पुस्तक आपको कभी धोखा नहीं दे सकती है। आपको पुस्तक से सिर्फ लाभ ही लाभ मिलेगा।

मित्रता के संदर्भ में, मैं अपने जीवन के कुछ अवस्थाओं एवं उस दौरान बने मित्रों का चर्चा करना चाहूँगा। मैं जब 5–6 वर्ष का था तो गाँव–मुहल्ले के सभी बच्चे मित्र थे। उन दिनों किसी से कितना भी झगड़ा हो जाए, फौरन मित्र बन जाते थे। साथ में खेलना, हुडदंग करना एवं एक–दूसरे के यहाँ भोजन करना सामान्य बात थी। मेरा बचपन का नाम है– दिवाना और मेरे बचपन के मित्र का नाम है– अकेला। हम दोनों का यह नाम गाँव के शिक्षक ने रखा था। हम दोनों मित्र बाल्यकाल में खूब मस्तियाँ करते थे। विद्यालय में जब गया तो पाया कि दो प्रकार के मित्र है– एक प्रतिभावान बच्चों की टोली और दूसरा पढ़ने में औसत बच्चों की टोली। हालांकि, ये विभाजन सिर्फ कक्षा में था। खेल के मैदान जाते ही सब मित्र हो जाते थे। मैं जब कक्षा 9–10 में गया तो तो धीरे–धीरे यह आभास होने लगा कि अमीर घर के बच्चे गरीब घर के बच्चों से दोस्ती नहीं रखना चाहते हैं। अपवाद में कुछ मित्र अमीरी–गरीबी की खाई को जोड़कर एक साथ रहते थे। जब कॉलेज का समय आया तो पाया कि लडके–लडकियाँ विपरीत लिंग के साथ मित्रता रखने में दिलचस्पी दिखा रहे थे, लेकिन गाँव व गरीब घर के लडके–लडकियाँ प्रायः अपने जैसे लोगों से ही मित्रता रखते थे। बचपन से लेकर युवा अवस्था तक कई अच्छे मित्र बने, किंतु यहाँ सब का नाम लिखना संभव नहीं है।

कुछ मित्रों ने मेरे व्यक्तित्व विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहा जाता है कि एक अच्छा मित्र बनाने के लिए खुद भी अच्छा बनना पडता है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण उसके द्वारा बनाए गए मित्र होते हैं, जीवन में सच्चा मित्र और मतलबी मित्र का भेद कर पाना असल में एक चुनौती है तथा व्यक्ति को परख कर ही मित्रों का चुनाव करना चाहिए। साथ ही पृथ्वी पर जी रहे सभी जीव–जन्तुओं से मित्रवत व्यवहार रखना भी बुद्धिमानी का कार्य है।

इंसान को अकेलापन अनुभव करना उसके भीतर की किसी कमी को दर्शाता है। ईश्वर ने प्रत्येक इंसान को पाँच मित्रों का साथ देकर भेजा है, वे हैं– शरीर, इंद्रियां, मन, बुद्धि और प्राण। ये पाँच मित्र हमारे इतने निष्ठावान है कि हम इन्हें जैसा आदेश देते हैं वे वैसा ही करते हैं। अच्छा–बुरा जैसा कर्म करने की इच्छा होती है, उसे हम मन को बता देते हैं, बुद्धि उसका पक्ष–विपक्ष सामने रखती है, शरीर उस कर्म को साधने में साथ देता है, इंद्रियां फल चखकर हमें तृप्त करती हैं, फिर इनसे पवित्रता या अपवित्रता का जैसा भी भाव उत्पन्न होता है, प्राण उसे ग्रहण कर लेता है। जब तक सुखद काल चलता है तब तक हम इन मित्रों के साथ उत्सव मनाते रहते हैं। जैसे ही दुख आता है ये पाँचों मित्र शोक में भी हमारा भरपूर साथ देते हैं। मन व्यथित हो जाता है, बुद्धि संशय से भर जाती है, शरीर शिथिल हो जाता है, इंद्रियां भोगों से विरक्त हो जाती है, प्राण ऊर्जा खोने लगता है। फिर हम एकाकीपन में चले जाते हैं। स्मरण रहे कि जो स्वयं अपना मित्र नहीं बन सकता, उसका कोई भी मित्र नहीं होता। कुछ लोग अच्छे कर्मों से इतने ऊर्जावान एवं सक्रिय रहते हैं कि वे सदैव लोगों की सहायता करने में आनंदित होते हैं। वे जीवन की अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सजीव भूमिका निभाते हैं। इंसानी मित्र के अलावा, हमें पुस्तकों से मित्रता रखनी चाहिए। साथ ही, इस बात पर मैं बल दूँगा कि हम सब को प्रकृति के साथ मित्रता रखना चाहिए। प्रकृति हमारा अविनाशी मित्र है। प्रकृति की गोद में जाकर आप सिर्फ आनंद की अनुभूति करेंगे। अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा कि प्रत्येक इंसान को एक सच्चा मित्र बनाना चाहिए क्योंकि आजकल के तनावपूर्ण जीवन में डिप्रेशन से बचने का रामबाण उपाय मित्रता ही है।

> **राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है**
>
> **-महात्मा गाँधी**

सकारात्मक सोच और हम

शिप्रा शालिनी आईन्द
कनिष्ठ अनुवादक

सकारात्मक सोच स्वास्थ्य और खुशहाल जीवन का मूलमंत्र है। ढेर सारी सूचनाओं और प्रतिस्पर्धी दुनिया में, हम अक्सर उन विचारों में गुम हो जाते हैं, जो हमारे दिमाग को अपने कब्जे में ले लेते हैं। जरूरी नहीं कि ये सभी विचार सकारात्मक हों। अकसर हम तनावपूर्ण चीजों के बारे में ज्यादा सोचने लगते हैं। जिससे हमारी शारीरिक ही नहीं मानसिक सेहत भी प्रभावित होती है।

हालांकि, नकारात्मक विचारों के इस चक्र को तोड़ना और सकारात्मक सोच पैदा करना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए फायदेमंद साबित होता है।

सफलता की कुंजी कहती है कि सफल, स्वस्थ और सुमधुर जीवन का पहला और आखिरी मंत्र है– सकारात्मक सोच। यह अकेला एक ऐसा मंत्र है, जो व्यक्ति को जीवन में सफलता दिलाता है। सकारात्मक नजरिए वाला व्यक्ति हर मौसम में फलने वाले फल के जैसा होता है, जो अपने अच्छे स्वभाव और सोच से आस–पास के लोगों को भी बदल देता है। यह सर्व कल्याणकारी मंत्र है। शांति, संतुष्टि, तृप्ति और प्रगति का अगर कोई प्रथम पहलू है, तो वह सकारात्मक सोच ही है। सकारात्मकता से बढ़कर कोई पुण्य नहीं और नकारात्मकता से बढ़कर कोई पाप नहीं। सकारात्मकता से बढ़कर कोई धर्म नहीं और नकारात्मकता से बढ़कर कोई अधर्म नहीं। सकारात्मक सोचेंगे तो आगे बढ़ेंगे। तनाव आपके आसपास भी नहीं फटकेगा। याद रखें, सकारात्मक सोच का अभाव ही मनुष्य की निष्फलता का मूल कारण है। कहते है कि सफलता की कोई मंजिल नहीं होती। यह तो एक यात्रा है, जो निरंतर चलती रहती है। इसमें वही आदमी सफल और सुखी है जो हमेशा सकारात्मक सोच रखता है। जीवन के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध होता है।

जीवन संघर्ष का नाम है, जहां संघर्ष नहीं, वहां जीवन नहीं। हमें हर क्षण अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए और अपने विकास के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इसी संघर्ष का नाम है जीवन।

संघर्ष चाहे श्वास के लिए हो या ग्रास के लिए, सफलता के लिए हो या फिर मान प्रतिष्ठा के लिए, धन के लिए हो या फिर ऐश्वर्य के लिए, संघर्ष तो करना ही पड़ता है। बिना संघर्ष और परिश्रम के, कभी किसी को कुछ नहीं मिलता और यदि भाग्यवश कुछ मिल भी जाए तो वह अधिक समय तक टिक नहीं पाता। जीवन में प्रतिकूलताएं तो आती ही रहती हैं। इन्हें स्वीकार करके ही व्यक्ति अपने जीवन को सफल व उन्नत बनाता है।

यह सच है कि जीवन में हर व्यक्ति सफल होना चाहता है, आगे बढ़ना चाहता है, किंतु वह कहां तक कुछ प्राप्त कर पाता है, यह उसके संघर्ष, परिश्रम और प्रयासों पर निर्भर करता है। जीवन में दुःख, समस्याएं, और चुनौतियां तो आती ही रहेंगीं, इनसे अब तक कोई नहीं बच पाया है, किंतु जीवन में सफल वही हुए हैं जो इनको स्वीकार करके इनका सामना करके और संघर्ष करते हुए इन पर विजय पाने का हौसला रखते हैं।

विपरीत परिस्थितियां हर व्यक्ति की जिंदगी में कभी न कभी आती ही हैं। ऐसे में

आत्मविश्वास सूखी रेत की तरह मुठ्ठियों से फिसलने लगता है। चारों तरफ अंधकार ही अंधकार नजर आता है, साहस घुटने टेकने लगता है। एक पल ऐसा लगता है कि सब कुछ नष्ट हो जाएगा। ऐसी स्थिति में केवल दो ही विकल्प शेष रह जाते हैं –करो या फिर मरो।

इसमें जो विपत्तियों से लड़े बगैर हार मान लेता है, उसका मरण तो निश्चित है। लेकिन जो साहस जुटाकर संघर्ष करता है। वही प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त कर सफल हो पाता है।

सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति समस्याओं के बारे में नहीं बल्कि उनके समाधानों की संभावनाओं को विकसित करने में विश्वास रखता है । वह अपनी सफलताओं, क्षमताओं, योग्यताओं और कौशल के बारे में सोचता है। जो उसे संघर्षों को स्वीकारने, सामना करने व समाधान करने के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं।

सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास बढ़ता है और आत्मविश्वास से कुछ कर गुजरने का साहस पैदा होता है। इसी साहस से उत्पन्न बल से व्यक्ति कठिन से कठिन समस्या को सुलझा लेता है। सकारात्मक सोच रखने से व्यक्ति मुश्किल परिस्थितियों में अपना आपा नहीं खोते, बल्कि शांत दिमाग से मुसीबत को सुलझाने के रास्ते ढूंढ़ते हैं।

भाषा ही राष्ट्र का जीवन है

- पुरूषोत्तमदास टंडन

रिपोर्ट कार्ड

अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

पापा आफिस में पहुंचे ही थे कि स्कूल से फोन आया!

सुरीली आवाज में एक मैम बोलीं।

"सर! आप की बेटी जो दूसरी कक्षा में है,

मैं उसकी क्लास टीचर बोल रही हूँ।

आज पैरेंट्स टीचर मीटिंग है। रिपोर्ट कार्ड दिखाया जाएगा।

आप अपनी बेटी के साथ टाईम से पहुंचें।"

बेचारे पापा क्या करते।

आदेश के पाबंद तुरंत छुट्टी लेकर, घर से बेटी को लेकर स्कूल पहुंच गए।

सामने गुलाबी साड़ी पहने, छोटी सी बिंदी लगाए, नयी उम्र की गोरी सी लेकिन बेहद तेज–तर्रार एवं खूबसूरत मैम बैठी थी।

पापा कुछ बोल पाते कि इससे पहले लगभग डांटते हुए मैम बोलीं – "आप अभी रुकिए, मैं आपसे अलग से बात करूंगी।"

पापा ने बेटी की तरफ देखा, और दोनों चुपचाप पीछे जाकर बैठ गए।

"मैम बहुत गुस्से में लगती है" बेटी ने धीरे से कहा।

"तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड तो ठीक है न" उसी तरह पापा भी धीरे से बोले।

"पता नहीं पापा, मैंने तो देखा नहीं।¸ "बेटी ने अपना बचाव किया।

"मुझे भी लगता है, आज तुम्हारी मैम तुम्हारे साथ मेरी भी क्लास लेंगी।" पापा खुद को तैयार करते हुए बोले।

वो दोनों आपस में फुसफुसा ही रहे थे कि तभी मैम खाली होकर बोलीं, "हाँ! अब आप दोनों भी आ जाइए।"

पापा किसी तरह उस शहद भरी मिर्ची–सी आवाज के पास पहुंचे और बेटी पापा के पीछे छुप कर खड़ी हो गई।

मैम– देखिए! आप की बेटी की शिकायत तो बहुत है लेकिन पहले आप इसकी परीक्षा की कॉपियां और रिपोर्ट देखिए और बताइए इसको कैसे पढ़ाया जाये।

मैम ने सारांश में लगभग सारी बात कह दी।

मैम– पहले इंग्लिश की कॉपी देखिए, फेल है आप की बेटी।

पापा ने एक नजर बेटी की ओर देखा, जो सहमी सी खड़ी थी।

फिर मुस्कुरा कर पापा बोले, ''अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है। इस उम्र में बच्चे अपनी ही भाषा नहीं समझ पाते।''

इतना मैम को चिढ़ने के लिए काफी था।

मैम– अच्छा! और ये देखिए! ये हिंदी में भी फेल है। क्यों?

पापा ने फिर बेटी की तरफ देखा।

मानो बेटी की नजरें सॉरी बोल रहीं हो।

पापा– हिंदी एक कठिन भाषा है। ध्वनि आधारित है। इसको जैसा बोला जाता है, वैसा लिखा जाता है। अब आप के इंग्लिश स्कूल में कोई शुद्ध हिंदी बोलने वाला भी तो नहीं होगा।

पापा की बात को मैम बीच में काटते हुए बोलीं, ''अच्छा! तो आप और बच्चों के बारे में क्या कहेंगे जो...''

इस बार पापा ने मैम की बात काटते हुए बोले, ''और बच्चे क्यों फेल हुए ये मैं नहीं बता सकता, मै तो....''

मैम चिढ़ते हुए बोली, "आप पूरी बात तो सुन लिया करो, मेरा मतलब था कि और बच्चे कैसे पास हो गये", "फेल नहीं"

अच्छा छोड़ो ये दूसरी कॉपी देखो आप। आज के बच्चे जब मोबाइल और लैपटॉप की रग–रग से वाकिफ हैं तो आप की बच्ची कम्प्यूटर में कैसे फेल हो गई?

पापा इस बार कॉपी को गौर से देखते हुए गंभीरता से बोले, "ये कोई उम्र है कम्प्यूटर पढ़ने और मोबाइल चलाने की। अभी तो बच्चों को फील्ड में खेलना चाहिए।''

मैम का पारा अब सातवें आसमान पर था, वो कॉपियां समेटते हुए बोली– "सांइस की कॉपी दिखाने से तो कोई फायदा है नहीं क्योंकि मैं भी जानती हूँ कि अल्बर्ट आइंस्टीन बचपन में फेल होते थे।"

पापा चुपचाप मैम की बातें सुन रहे थे।

मैम ने फिर शिकायत आगे बढ़ाई, "ये क्लास में डिसीप्लीन में नहीं रहती, बात करती है, शोर करती है, इधर–उधर घूमती है।''

पापा ने मैम को बीच में रोक कर, खोजती हुई निगाह से बोले, ''वो सब छोड़िए! आप कुछ भूल रहीं हैं। इसमें गणित की कापी कहां है? उसका रिजल्ट तो बताइए।''

मैम (मुंह फेरते हुए), हां, उसे दिखाने की जरूरत नहीं है।

पापा– फिर भी, जब सारी कॉपियां दिखा दी तो वही क्यों बाकी रहे।

मैम ने इस बार बेटी की तरफ देखा और अनमने मन से गणित की कॉपी निकाल कर दे दी।

गणित का नम्बर, और विषयों से अलग था–100%

मैम अब भी मुंह फेरे बैठी थीं, लेकिन पापा पूरे जोश में थे।

पापा– हाँ तो मैम, मेरी बेटी को इंग्लिश कौन पढ़ाता है?

मैम (धीरे से)– मैं!

पापा– और हिंदी कौन पढ़ाता है?

मैम– "मैं"

पापा– और कम्प्यूटर कौन पढ़ाता है?

मैम– वो भी "मैं"

पापा– अब ये भी बता दीजिए कि गणित कौन पढ़ाता है?

मैम कुछ बोल पाती, पापा उससे पहले ही जवाब देकर खड़े हो गए।

पापा– "मैं"

मैम (चिढ़ते हुए)– हां पता है।

पापा– तो अच्छा टीचर कौन है? दुबारा मुझसे मेरी बेटी की शिकायत मत करना। बच्ची है, शरारत तो करेगी ही।

मैम तिलमिला कर खड़ी हो गई और जोर से बोलीं– "मिलना तुम दोनों आज घर पर, दोनों बाप बेटी की अच्छे से खबर लेती हूं।"

> **हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असंभव है**
>
> -गिरधर शर्मा

मेजर डी. पी. सिंह–
भारत के पहले ब्लेड रनर

अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

50 वर्षीय मेजर (सेवानिवृत्त) डी.पी. सिंह दिसंबर 1997 में भारतीय थल सेना में भर्ती हुए थे और 13 जुलाई 1999 को उन्होंने जम्मू–कश्मीर के अखनूर सेक्टर में बनी एक पोस्ट को संभाला।

15 जुलाई 1999, भारत पाकिस्तान कारगिल युद्ध

हिमालय के युद्ध क्षेत्र में 25 वर्षीय मेजर देवेन्द्र पाल सिंह दुश्मनों से लड़ते हुए बुरी तरह से घायल हो चुके थे। एक तोप का गोला उनके नजदीक आ फटा। उन्हें नजदीकी फौजी चिकित्सालय लाया गया, जहाँ उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

लेकिन 25 वर्ष का वो नौजवान सैनिक मरने को तैयार नहीं था। जब उन्हें नजदीकी मुर्दाघर ले जाया गया, तो एक अन्य वरिष्ठ चिकित्सक ने देखा कि अभी तक उनकी साँसे चल रही है। मोर्टार बम्ब के इतने नजदीक से फटने के बाद किसी भी सामान्य व्यक्ति का बचना नामुमकिन होता है, लेकिन देवेन्द्र पाल सिंह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे। वे मौत से लड़ने को तैयार थे।

लहूलुहान देवेन्द्रपाल सिंह की अतड़ियां खुली हुई थी। चिकित्सकों के पास कुछ अतड़ियां काटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उन्हें बचाने के लिए उनका एक पैर भी काटना पड़ा, लेकिन किसी भी कीमत पर मेजर मरने को तैयार नहीं थे।

मेजर ने इस हादसे में न केवल अपना एक पैर खोया बल्कि वे कई तरह की शारीरिक चोटों और समस्याओं से घिर चुके थे। उनकी सुनने की क्षमता कम हो चुकी थी, उनके पेट का कई बार ऑपरेशन हुआ।

आज इतने वर्षों बाद भी बम के 40 टुकड़े उनके शरीर के अलग अलग भागों में मौजूद है जिसे निकाला नहीं जा सका।

देवेन्द्र कहतें हैं।

"वास्तविकता को समझना और उस पर पार पाना बहुत लोगों के लिए कठिन होता है लेकिन मैं और मेरे साथी जो घायल हुए थे, हमारे लिए ये गौरव की बात थी क्योंकि हम हमारे देश की रक्षा करते वक्त घायल हुए थे।"

मेजर की इच्छाशक्ति और मजबूत इरादों से उनकी जान तो बच गई लेकिन उन्हें अब एक नया जीवन जीना सीखना था इसीलिए वो 15 जुलाई को प्रति वर्ष डेथ एनिवर्सरी और पुनर्जन्म के लिए केक काटते हैं। इस दिन हीं उन्होंने निश्चय किया की अब वे अपनी अपंगता के बारे में और नही सोचेंगे। उन्होंने अपनी इस कमजोरी को एक चुनौती के रूप में

स्वीकार किया। वे एक वर्ष तक चिकित्सालय में रहे, किसी को भी विश्वास नहीं था कि वे अब कभी चल भी पाएंगे, लेकिन देवेन्द्र सिंह जी को अपंगता की जिंदगी स्वीकार नहीं थी। उन्होंने निश्चय किया कि–

"वे न केवल चलेंगे बल्कि दौड़ेंगे।"

अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद उन्होंने बैशाखी के सहारे चलना शुरू कर दियाद्य कुछ समय बाद उन्हें कृत्रिम पैर लगा दिया गया। लेकिन कृत्रिम पैरों के साथ चलना इतना आसान नहीं था, देवेन्द्र जी को हर दिन भयानक दर्द सहना पड़ता था।

जब वे गिरते थे तो एक नए उत्साह के साथ उठ खड़े होते थे लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

देवेन्द्र हर रोज सुबह 3 बजे उठ जाते थे और अपनी प्रैक्टिस शुरू कर देते। कुछ महीनों की प्रैक्टिस के बाद देवेन्द्रपाल जी पांच किलोमीटर तक चलने लग गए। कुछ समय बाद उनकी मेहनत रंग लाई और वे अपने कृत्रिम पैर से मैराथन में दौड़ने लगे।

फिर उन्हें साउथ अफ्रीका से फाइबर ब्लेड से बने अच्छे कृत्रिम पैरों के बारे में जानकारी मिली जो अधिक लचीले और दौड़ने के लिए बेहतर थे।

इस तरह धीरे–धीरे उनकी दौड़ने की गति बढ़ती गई और उन्होंने अपनी विकलांगता को हरा दिया।

17 वर्ष बाद आज देवेन्द्रजी भारत के एक सफल ब्लेड रनर है और उनके नाम 2 वर्ल्ड रिकॉर्ड है। देवेन्द्र कई मैराथन दौड़ों में हिस्सा ले चुके हैं और आज भी वे थकते नहीं। वे सांगला, लेह और कारगिल में हुई मैराथन में भी दौड़ चुके हैं। इसके अलावा चार बार लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अथवा 2018 में भारत सरकार ने उन्हें राष्ट्रीय प्रेरक व्यक्तित्व का सम्मान दिया है। सौ फीसदी दिव्यांग घोषित किए जाने के बावजूद उन्होंने अंगदान और बोन मैरो दान करने का संकल्प ले रखा है। मेजर सिंह ने नासिक में पहली बार सफल स्काई डाइविंग की और ऐसा करने वाले वे एशिया के पहले दिव्यांग हैं।

50 वर्षीय देवेन्द्र ब्लेड रनर होने के साथ–साथ एक सफल प्रेरक वक्ता भी हैं। वे अपने जैसे लोगों को प्रेरित करने के लिए 2011 से "The Challenging Ones" नाम से एक गैर सरकारी संस्था चलाते हैं जिसमे लगभग 2700 सदस्य हैं।

वो कहते हैं,

मुझ जैसे लोगों को "Physically Challenged" (विकलांग" या "कमजोर") कहकर संबोधित किया जाता है लेकिन मुझे लगता है कि हम "Challenger (चौलेंजर)" हैं।

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है

-बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'"

विश्व पर जैविक आतंक का खतरा

उमेश कुमार ओझा
वरिष्ठ लेखाकार

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि जैविक आतंक है क्या ? सामान्य अर्थो में कहा जाय तो यह कहा जा सकता है कि जैविक हथियारों से किया जानेवाला हमला जैविक आतंक के अंतर्गत आते हैं। वास्तव में, जैविक हथियार गम्भीर रोगों के जीवाणुओं द्वारा किया जानेवाला वह हमला है, जिसे बहुत ही आसानी से वायु, जल और किसी और माध्यम से मनुष्यों तक फैलाया जा सके।

जैविक हथियार खतरनाक एवं लाइलाज रोगों के रोगाणुओं का ऐसा सीधा हमला है जो दुश्मन देशों के सीमा पर किया जा सकता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह हथियार दूरगामी मार करते है तथा इसका प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी भी चल सकती है। जहाँ एक तरफ पीढ़ी दर पीढ़ी अपना प्रभाव दिखा सकती है वही दूसरी तरफ इसकी अत्यल्प मात्रा लाखों करोड़ो लोगों को काल के गाल में पहुँचा सकती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इंफ्लुएंजा विषाणु का मात्र एक माइक्रो मिलीग्राम मात्रा ही एक लाख आबादी को बर्बाद करने के लिए पर्याप्त है।

इसी प्रकार परसिनिया पेस्टीस जो जैविक आतंक का हथियार है यह विषाणु मनुष्य एवं पशुओं के खून में त्वचा के छिद्रों के जरिए पहुँचता है तथा रक्त में उपस्थित न्यूट्रोफिल्स को नष्ट कर देता है। इस हथियार को और अधिक कारगर बनाने हेतु अनेक देशों द्वारा कीटाणु विष भी तैयार किया जाता है। वैज्ञानिकों के मतानुसार यह पता चलता है कि इस विष की एक मिलीग्राम मात्रा पूरे देश/विश्व को बर्बाद करने के लिए पर्याप्त है। परीक्षणों में यह प्रमाण मिले है कि इस कीटाणु की चपेट में आनेवाले जीवधारी तेजी से उल्टियाँ करने लगता है, शरीर में शिथिलता आ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई होने लगती है। साथ ही साथ यह लाईलाज भी है और अंततः रोगी की मृत्यु हो जाती है। इस हथियार के रूप में प्रयोग किय जानेवाले जीवाणु/विषाणु प्रयोगशाला में बड़े पैमाने पर विकसित किये जाते हैं एवं विकसित करने के पश्चात् उन्हें वायु के माध्यम से मानव/पशु के शरीर में प्रवेश कराने की कोशिश की जाती है ताकि बड़ी संख्या में लोगों को मारा जा सके। एंथ्रेक्स एवं कोरोना वायरस इसी प्रकार के आतंक का उदाहरण है। जिसके प्रभाव से करोड़ो लोग काल के गाल में समा गये थे। इस प्रकार के जैविक आतंक से निपटने के लिए अभी तक विश्व स्तर पर कोई समाधान नहीं निकल पाया है। इसके लिये विकसित एवं विकाशसील देशों को आपस में मिलजुल कर सख्त नियम बनाने चाहिए ताकि कोई भी देश इस प्रकार के हथियार का अपने दुश्मन देशों के विरूद्ध उपयोग नहीं कर सके।

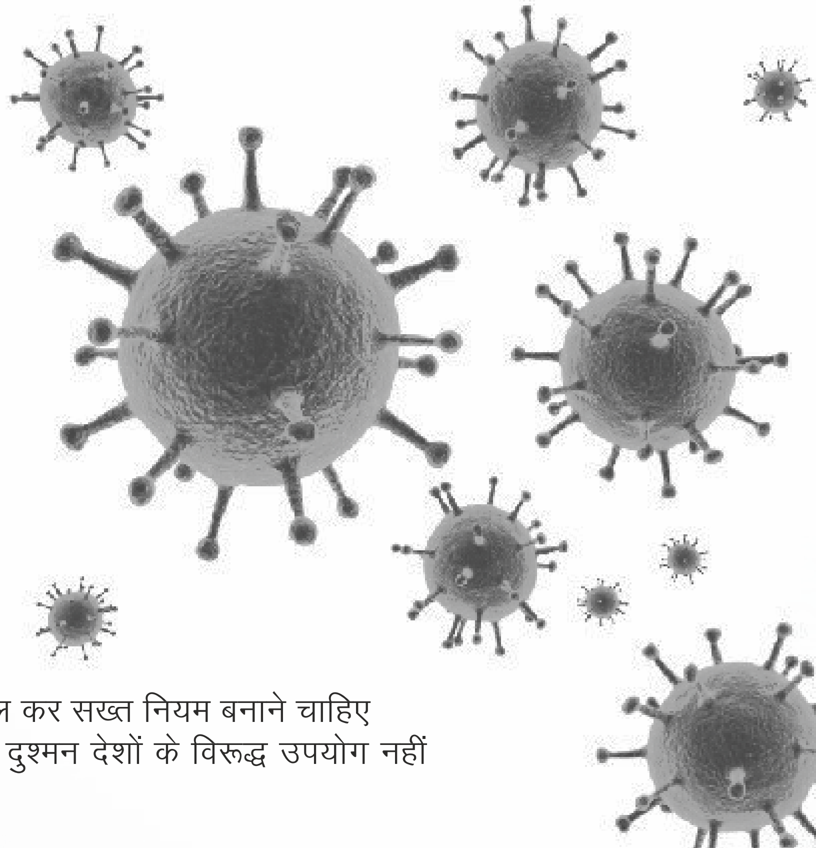

रख मुट्ठी में वक्त को

सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

अभी ना कर मन अनमना,
अभी ना हिम्मत हार।
अभी पार करनी तुझे,
राहे यहां हजार।।

रख मुट्ठी में वक्त को, रख सीने में आग।
रख आंखों में मस्तियां,
गा फिर जीवन–राग।।

तोड़ बंदिशें, जोड़ तू, मन से मन की प्रीत।
पहले मन को जीत ले,
फिर दुनिया को जीत।।

खड़े मुश्किलों के यहां,
कदम कदम मारीच।
रख दे अपने हौंसले, हर मुश्किल के बीच।।

अपने मन का आईना, पल–पल यार संवार।
तुझसे मिलना चाहता, तेरा ही किरदार।।

खुद को जब भी देखना, खुद से ही नाराज।
सुनना खुद में ठहरकर,
खुद की ही आवाज।।

टाँक समय के वक्ष पर,
कुछ अपना भी जिक्र।
करता है इस दौर में,
कौन किसी की फिक्र।।

दुःख ने जीवन भर किया,
जी भर कर संवाद।
जितना हम भूले उसे, उतना आया याद।।

सुख आया कुछ देर को,
गया दिखाकर रंग।
दुःख ने ही आखिर दिया,
अपने दुःख का संग।।

दुनिया भर की खोज में, भाग रहा है रोज।
वक्त मिले तो एक दिन,
खुद में खुद को खोज।।

गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

किसान–आंदोलन

ये कैसा उत्त्थान है ?
सड़कों पे किसान है।
गाँवो में सन्नाटा छायी, वीरान खेत खलिहान है।
देखो देश की बदहाली, रूठ गई है खुशहाली।
लहलहाते खेत जहाँ, सुनसान है अब वहाँ।
ये कैसा उत्थान है ?
सड़कों पे किसान है।
जिन खेतों में सरसों अलसी, अब ये मरु समान है।
मक्का–गेहूं–जौ–बाजरा, नहीं कहीं अब धान है।
मिट्टी की खुश्बू में बसती, जिन मानुष की जान है।
कहलाते है ये अन्नदाता, खो रही इनकी पहचान है।
ये कैसा उत्थान है ?
सड़कों पे किसान है।

दिल में कुछ अरमान लिए,चल पड़े दिल्ली की ओर,
खटखटाने दरवाजे उनके, शासन है जिनकी बागडोर,
पर क्या अब वे सुन पाएंगे, निज पीड़ा–सा सह पाएंगे ?
कभी बने थे याचक जो, दरवाजे भाग्य के खोल पायेंगे ?
मन में कई सवाल है, फिर भी अटल विश्वास है।
ये कैसा विधि–विधान है?
सड़कों पे किसान है।
बरस रहे हैं आँसू के गोले, पथ में बिछी है कंकड़–रोड़े।
धर्म नहीं ये कर्म–युद्ध है, कृषक वीर बलवान है।
अनदेखे पैरों के छाले, उमड़ रही स्वाभिमान है।
ये कैसा उत्थान है?
सड़कों पे किसान है।

पर्यावरण एवं मानव

गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

आज, अभी, यहीं आरम्भ करो।
कुछ तो विश्व का कल्याण करो।
सर्व शक्ति की इस होड़ में,
माँ धरती का भी ख्याल करो।।

देवों की इस भूमि पर, दानवों सी करतुत तुम्हारी,
मानव पर ही मानव बरसे, बन जाये न इतिहास तुम्हारी।
मनु की स्मृति काया पर, बाणों का न प्रहार करो,
आज, अभी, यहीं आरम्भ करो।
कुछ तो विश्व का कल्याण करो।।

धरती को महाद्वीपों में बाँटा,
बंटा जल महासागरों में।
कर रहा क्या मानव तु?
बंटा आकाश अंतरिक्ष में।
ग्रहों की दिशा बदल दी, बदली दशा नक्षत्रों की,
क्रूरता के जाल से हटकर, प्रकृति का भी ख्याल करो।
आज, अभी, यहीं आरम्भ करो।
कुछ तो विश्व का कल्याण करो।।
आवास बनी यह धरती तेरी, यात्रा करता नभ पर तु।
छोड़ दे मानव खुद की जिद, खो देगा ये वैभव तु।
जल बचा तु, पेड़ लगा तु, हवा शुद्ध संचार रहे,
मर रही इस पर्यावरण में, गुल–गुलशन सा गुलजार रहे।
आज, अभी, यहीं आरम्भ करो।
कुछ तो विश्व का कल्याण करो।
सर्वशक्ति की इस होड़ में,
माँ धरती का भी ख्याल करो।।

सड़क दुर्घटना

कुन्दन कुमार
लेखाकार

गलती किसी और से हुई,
भुगतने की सजा किसी और को मिली,
तेज रफ्तार से चल रही थी गाड़ी,
अभी, भीड़ हैं उन्हें घेरे खड़ी,
रह गए अधूरे काम कई,
अब बच्चों के माँ–बाप नहीं,
रजा ये ऊपर वाले की हुई,
या पिछले जनम का हिसाब कोई,
मौत तो सभी के हिस्से है लिखी,
फरक पड़ता है मगर कैसे हुई ?
जिंदगी जीना चाहते हो तो,
सड़क हादसों से सबक लीजिए,
भारत में हर घण्टे में,
19आदमी मर जाते हैं रोड एक्सीडेंट में,
हेलमेट, सीट बेल्ट लगाने में कैसी शर्मसार,
रेड लाइट, डीपर, सड़क क्रोसिंग देख कर करें पार,
लाइसेंस बनवाइये, नियमों को अच्छे से जानिए,
जिंदगी बचानी है तो सड़क पर वाहन चलाते समय नियमों को पालन कीजिए।

विजयादशमी

प्रदीप कुमार
लेखाकार

हर मन राम,
घर घर राम।
प्रेम से बोलो,
जय श्री राम।

कोई नहीं लक्ष्मण है बनता,
कोई नहीं भरत है बनता।
आदर्शों का दंभ है भरते,
रामाज्ञा पालन नहीं करते।

होता नारी पर अत्याचार,
होता दुर्बलता का व्यापार।
रावण के पुतले सभी जलाते,
रावण को कभी नहीं जलाते।

अहंकार को आज जलायें,
अंतर्मन को और तपायें।
आत्मज्योति प्रज्वलित कर,
विजयादशमी पर्व मनायें।
'' जय श्री राम ''

प्रदीप कुमार
लेखाकार

संतोष कुमार राय
लेखाकार

मंजिल बस दो कदम

जिंदगी की दौड़ में,
सब कुछ पाने की होड़ में,
जीवन मूल्य न भूले हम,
मंजिल बस दो कदम।

राह में कोई मिला,
राह में कोई भूला,
मत कर कोई गिला,
मंजिल बस दो कदम।

चुभती है धूप कभी
खुशी देती छाँव कभी
जिंदगी का गीत यही,
मंजिल बस दो कदम।

मिलती है जो हार कभी,
हार के बाद है जीत भी,
आगे बढ़ते रहो हरदम,
मंजिल बस दो कदम।

गिर जाना मेरा अंत नहीं

पर में परवाज की शक्ति है, मन में आगाज की शक्ति है।
पर परवाज की शक्ति है, मन में आगाज की शक्ति है।
जो चोंच में तिनका डाले, डाली पर वो आंखें तकती है।।
वह परख रही है, तूफां के बाजू मे कितनी ताकत है।
वो देख रही है, दूर–दूर तक नाम मात्र की राहत है।।
पैरों से धक्का डाली पर, पंखों से हवा ढकेली है।
वो आसमान के तूफानों से लड़ती जान अकेली है ।।
पर लगी सांस जब फूलने तो, तूफां ने मौका लपक लिया।
आसमान की उम्मीदों को ला धरती पर पटक दिया ।।
वह झाड़ रही है धूल पैरों से, रंगों में गजब रवानी है।
चोट खाने के बावजूद, उड़ने की ललक पुरानी है।।
सब रखो घोषणा अपनी–अपनी, अपने–अपने कंठो में ।
गलत करूंगा साबित सबको, यहाँ कोई अरिहंत नहीं ।
गिर जाना मेरा अंत नहीं, गिर जाना मेरा अंत नहीं ।।
मुखड़े गालों पर पर धूल लगी माना, माथा फूटा माना लेकिन.
गालो पर थप्पड़ खाए हैं, जबड़ा टूटा माना लेकिन,
माना की आंतें ऐंठ गयी, पसलियों से लहू निकलता है,
घिस गया घुटना कंकर में, और मिर्च सरीखे जलता है,
माना की सांसे उखड़ रही, और धक्का लगता धड़कन से,
लो मान लिया की कांप गया, पूर्ण बदन अंतर्मन से।
पर आँखों से अंगारे, मैं नथुनों से तूफां लाऊँगा,
पर आँखों से अंगारे मैं नथुनों से तूफां लाऊँगा।
गिर–गिर कर भी धरती पर, हर बार खड़ा हो जाऊँगा।
मुट्ठी में भींच लिया तारा तुम नगर मे ढोल पीटा दोजी,
मुट्ठी में भींच लिया तारा तुम नगर मे ढोल पीटा दोजी,
कि अंधेरे हो लाख घने ,पर अंधेरे अनंत नहीं,
गिर जाना मेरा अंत नहीं, गिर जाना मेरा अंत नहीं ।।

गृहिणी

अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

रसायनशास्त्र से शायद ना पड़ा हो पाला।
पर उनका सारा रसोईघर है एक प्रयोगशाला।।

दूध में साइट्रिक एसिड डालकर पनीर बनाना।
या सोडियम बाई कार्बोनेट से केक को फूलाना।

चम्मच से सोडियम क्लोराइड का सही अनुपात,
तोलकर रोज कितने ही प्रयोग कर डालती है।
पर खुद को कोई वैज्ञानिक नहीं बल्कि,
खुद को बस गृहिणी ही मानती है।।

रसोई गैस की बढ़े कीमते या सब्जी के बढ़े भाव।
पैट्रोल डीजल महँगा हो या तेल में आए उछाल।।

घर के बिगड़े हुए बजट को झट,
खुद से हीं सम्हालती है।
अर्थशास्त्री होकर भी वो,
खुद को बस गृहिणी ही मानती है।।

मसालों के नाम पर भर रखा है भंडारा,
आयूर्वेद का खजाना गमलो में उगा रखे हैं।

तुलसी, गिलोय, करीपत्ता के मददों से,
छोटी मोटी बीमारियों को काढ़े से भगाना जानती है।
आयुर्वेद चिकित्सा का ठीक ठाक ज्ञान होने पर भी,
खुद को बस गृहिणी ही मानती हैं।।

सुंदर रंगोली और मेहँदी में नजर आती इनकी चित्रकारी।
सुव्यवस्थित घर में झलकती है इनकी खूबसूरत कलाकारी।।

संगीत की धुन, ढोलक की थाप पर गीत गाती नाचती है।
इतने कलाओं का ज्ञान है पर खुद को बस गृहिणी ही मानती है।।

समाजशास्त्र ना पढ़ा हो शायद,
पर पता है् परिवार समाज की इकाई है।
मिलजुल कर अगर साथ रहें सब,
इसी में हम सबकी भलाई है।।

परिवार को उन्नत कर, समाज की उन्नति में,
पूरा योगदान डालती है।
इतने गुणों से है भरपूर पर,
खुद को बस गृहिणी ही मानती है।।

मनो वैज्ञानिक भले ही ना हो,
पर घर में सबका मन पढ लेती है।
किसको किस वक्त क्या चाहिए,
सबकुछ समय पर देती है।।

रिश्तों के उलझे धागों को,
सुलझाना खूब जानती है।
एक डोर में सबको बांधने की हुनर है पर,
खुद को बस गृहिणी ही मानती हैं।।

योग ध्यान के लिए समय नहीं है,
ऐसा अक्सर कहती है।
सुबह से लेकर रात्रि तक,
एक पैर पर हाजिर रहती है।।

प्रार्थना मे ध्यान लगाकर,
घर की कुशलता मांगती है।
एक पुजारिन है अंदर में पर,
खुद को बस गृहिणी ही मानती है।।

ये गृहणियां सच में महान है।
कितने ही गुणों की खान है।।

सर्वगुण सम्पन्न हो कर भी,
अहंकार नहीं पालती है।
इतने गुणवान होकर भी,
खुद को बस गृहिणी ही मानती है।।

इंतजार

मन्नु कुमार सिंह
लेखाकार

माँ की आँखों में बसी चिंता, पिता भी दिल में उम्मीद लिए,
अपने आंगन में बाल–गोपाल आने के इंतजार में।

माता–पिता के हुए अरमान अब पुरे,
खत्म हुआ वो पल जो थे इंतजार में।

पर नयी आकांक्षाओं के बोझ में ऐसा उलझा जीवन,
कि सारा बचपन बीता नई उम्मीदों के इंतजार में।

नई आशाओं को पंख लगाकर खिड़की के पीछे बैठी,
दिन–रात इंतजार में।

सूरज उगता धुंधला सा,
आसमान में सवेरा होने की तारीख बेताबी से इंतजार में।

रोज उम्मीदों की डोर बांधी, नौकरी के दरवाजे पर खड़ी,
कब खुलेगा, यह सवाल हर पल इंतजार में।

सपनों की राह में चलते, कितने तोते, कितने पाँव छलते,
हाथों में आशाओं की माला, कब टूटेगी यह संवेदना इंतजार में।

क्या वो दिन आएगा, जब खुशियों का रंग चढ़ेगा,
क्या वो समय आएगा, जब कामयाबी का फल मिलेगा।

धीरे–धीरे गुजरता है समय, करीब आती है वो खुशियों की बारात,
नौकरी का सफर, एक अद्भुत रहस्य, सब्र के फूल खिलते हैं, इंतजार में।

अब मिली है सपनों को नई उड़ान ना जाने कितने संघर्षो के बाद,
छुटे नहीं यह डोर यूँ हीं इंतजार में।

बातें

कृष्ण लाल
लेखाकार

कहने को तो बहुत सी बातें हैं,
हर दिल में बसी अनकही बातें हैं,
रातों की चुप्पी में गूँजतीं,
मन के कोने में छुपी बातें हैं।

कभी हंसी में ढलतीं ये बातें,
कभी आँसुओं में बहतीं बातें,
दोस्तों के संग हँसती ये बातें,
तनहाइयों में सिसकतीं बातें।

माँ की लोरी में छुपी बातें,
पिता की डांट में जमी बातें,
प्यार की नजरों में चमकती बातें,
विरह की अग्नि में जलती बातें।

कभी किताबों में मिलती बातें,
कभी गीतों में बसी बातें,
चाय की प्याली में सजी बातें,
जिंदगी के सफर में हर रोज नई बातें।

बचपन की यादों में बसी बातें,
जवानी के ख्वाबों में पली बातें,
बुढ़ापे की सीखों में सजी बातें,
हर उम्र में बदलती ये बातें।

रिश्तों की डोर में बंधी बातें,
सपनों के पुलिंदे में बसी बातें,
कभी सच्ची, कभी झूठी बातें,
मन को भाती और रुलाती बातें।

इन बातों में ही है जीवन की कहानी,
हर पल नई, हर क्षण पुरानी,
इन बातों से ही तो दुनिया रंगीन,
हर दिल में छुपी, हर चेहरे पर बसी।

जीवन

प्रखर जैन
द्वारा– प्रतीक जैन, स.ले.अ.

कल तक बस जो दरिया थे, सब संमदर हो गए,
मीठे पावी का सौदा कर खारे के अंदर हो गए।।

इंसान बने थे मुश्किल से जो लंबी सदियां जी करके
जात पात के चक्कर में फिर से बंदर हो गए।।

पाखंड त्याग कर दुनिया को सबक सिखाने वाले,
दुनियादारी की चकाचौंध में सब कलंकर हो गए।।

दुख दर्द भरे जीवन में जो मरहम बनकर आये,
भीनी हवा का झोंका पाकर सब बवंडर हो गए।।

मिसाल बने जो घर–घर में अपने नेक इरादों से,
संपत्ति के झगड़े में पड़कर सब प्यादे हो गए।।

जो सादगी की मूरत थे मेरे मन–मंदिर के अंदर,
थोड़ी सी दौलत शोहरत पाकर सारे आडंबर हो गए।।

साथ रहे जो साये जैसे जीवन की हर कठिनाई में,
जमीं की तरह जो पास थे जाने कब अंबर हो गए।।

मुझे फिर से जीना है।

संजीव कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
का. प्र. नि. ले. प. (केन्द्रीय)
हैदराबाद, शाखा–भुवनेश्वर

संसार की आशापूर्ण जीवन में,
कहीं अंधियारों में तो कहीं उजालों में,
वीरान मरूस्थल में या चंचल नदियों की तीव्र धारा में,
मुझे फिर से जीना है।

पिता के स्नेह में, माँ के प्यार में,
भाई–बहन के प्रेमपूर्ण कलह में, घर के चहकते आँगन में,
गुरूजनों के आदर्शों में, बडे–बुजुर्गों के डाँट–फटकार में,
मुझे फिर से जीना है।

मित्रों के संगत में, दुश्मनों को पुनः मित्र बनाने में,
कर्म पथ के क्रमिक विकास में, मानवता की लाज बचाने में,
राहगीरों को राह दिखाने में, सेनाओं के सम्मान में
मुझे फिर से जीना है।

राष्ट्र की विकास में, समाज के उत्थान में,
गाँवो के हरियाली में, शहरों की सजीवता में
बंजर भूमि में, हरे–भरे मैदानों में
मुझे फिर से जीना है।

ध्यान व योगा में, शांति व सुलह में,
अचल पर्वतों में, घने जंगलों में,
संसार के कल्याण में, भारत वर्ष के समृद्धि में,
मुझे फिर से जीना है।

भ्रष्टाचार

जगरनाथ सन्डील
वरीय प्रमंडलीय
लेखा पदाधिकारी

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भष्टाचार घनघोर है।।

चारों ओर भ्रष्टाचारियों का जोर है।
हर जगह रहता इनका शोर है।।
आई.ए.एस. हो आई.पी.एस., आम हो या खास
भ्रष्टाचार में लिप्त सबका अनचाहा गठजोड़ है।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

हर कोई मौके की तलाश में है,
भ्रष्टाचार का धन बटोरने की आस में है।
देश, समाज, धर्म और नैतिकता से दूर,
भ्रष्टाचार की काली कमाई करने के प्रयास में है।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

लूट रहा है हर कोई खुद को,
खो दिये हैं अपने सुध–बुध को,
भारत जैसे महान धार्मिक देश में भी,
कमजोर किये गये हैं ईमान के युद्ध को।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

विद्वाता, नेता, साधु और महात्मा,
नैतिक ज्ञानदाता का नहीं है खात्मा,
लोभ–लालच के माया जाल में,
कोई भी बचा पाया अपना ईमान आत्मा।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

परायी बेईमानी मन को जलाती है,
खुद करे तो मन से मजे लेती है।।
कर्म वहीं, पर विचार बदल जाती है,
वाह रे बेईमानी क्या–क्या रंग दिखाती है।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचारियों के लिए हर काम काली रात का है।
सोच इनका हरपल हर कदम घात का है।
परिणाम का ज्ञान सबमें हर बात का है।
पर, कर्म इनका खुद–से–खुद को आघात का है।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

हर कोई आतुर करने भ्रष्टाचार को,
ताक पर रख देता धर्म और शिष्टाचार को,
हर कार्यालय पर भ्रष्टाचारियों की गोलबंदी है,
लगता ऐसा कि हर कार्यालय लूट की मंडली है।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

हर कर्मी का कर्तव्य है जिम्मेवारी और निगरानी का,
इन पर पहरा बना रहता विभाग निगरानी का,
जाँच और संतुलन का सलीका नायाब है,
फिर भी भ्रष्टाचारियों का तरीका कामयाब है।।

कोई ईमान चोर है, कोई कामचोर है।
हर कोई चोर है, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

जोक्स

संतोष कुमार राय
लेखाकार

1. जेलर : तुम्हें कल सुबह छः बजे फांसी हो जाएगी।

   कैदी : हा–हा–हा

   जेलर : हँसते क्यों हो ?

   कैदी : मैं तो उठता ही सुबह दस बजे हूँ।

2. एक मच्छर एक व्यक्ति को परेशान कर करा था। वह आदमी तंग आकर पलंग के नीचे सो गया। तभी वहाँ एक जुगनू आ गया। उसे देख आदमी ने कहा–वह मुझे टॉर्च लेकर ढूँढ रहा है।

3. कुछ वैज्ञानिकों ने चोर पकड़ने वाली मशीन बनाई। इसके जरिये अमेरिका में बीस चोर पकड़े गये। रूस में तीस पकड़े गये। भारत में दस मिनट में मशीन ही गायब हो गई।

4. महिला : सेठ जी, लाल मिर्च देना।

   सेठ (पास खड़े नौकर से) : हरी मिर्च देना।

   महिला : सेठ जी मुझे लाल मिर्च चाहिए।

   सेठ : हरी मिर्च देना जल्दी !

   महिला : (गुस्से से लाल होकर) सेठ तुम पागल हो क्या ? मैंने लाल मिर्च मांगी है।

   सेठ : बहन जी, ज्यादा गुस्सा मत करो, ठंड रखो, ठंड! लाल मिर्च ही देंगे हरी तो इस नौकर का नाम है।

5. सोनू : तुम्हारी दुकान में इतनी सारी मिठाई रखी रहती है, कभी खाने का मन नहीं करता, मन तो बहुत करता है, पर पापा मारेगे, इसलिए चाट कर रख देता हूँ।

सुहासिनी
द्वारा– रंजन कुमार, लेखाकार

पेड़ हमारे साथी हैं

पेड़ हमारे साथी हैं,
छाया हमको देते हैं।
बाढ़ से हमें बचाते है,
मीठे फल भी देते है।
पेड़ कितने जरूरी है,
फिर भी बेचारे कटते है।
हम भी पेड़ लगाएंगे,
संसार को हरा भरा बनाएंगे।।

नानी की कहानी

बोंली नानी, सुनों कहानी,
ना कोई राजा, ना कोई रानी।
तुमको मैं देती संदेश,
कभी न भूलो अपना देश।
कड़वें बोल कभी न बोलो
जब भी बोलो, मीठा बोलो,
पढ़ने में तुम ध्यान लगाओ,
कभी काम से न घबराओ।
जो करना है अब कर डालो
कल पर उनको कभी न टालो।।

असत्य की गूंज

अब कोई इम्तिहान है ही नहीं,
दूर तक आसमान है ही नहीं।

बात मैं आसुओं से करता हूँ,
मेरे मुहँ में अब जुबान है ही नहीं।

बस्तियों को बुझाने जाऊँगा मैं
चाहे मेरा मकान है ही नहीं।

तुम हो पत्थर, तुम्हें लुढ़कना है,
और आगे ढलान है ही नहीं।

एक सूरज हूँ ऐसा मैं जिसको,
रौशनी का गुमान है ही नहीं।

उसके तलवे भी चाट लो चाहे,
वक्त अब मेहरबान है ही नहीं।

मेरी गजलों के साथ चलते रहो,
इस सफर में थकान है ही नहीं।

आयुष कुमार
द्वारा– अमित कुमार, क.अ.

माइंस टीजर्स

श्री ओम
द्वारा उमेश कुमार ओझा, व.ले.

1. काली है पर काग नहीं
   लंबी है पर नाग नहीं
   बलखाती है पर डोर नहीं
   बाँधते है पर रस्सी नहीं   उत्तर : चोटी

2. बुझो दीदी एक पहेली,
   जब भी काटो मुझको
   मैं दिखती नई–नवेली,
   मुझसे बनता बच्चों का भविष्य ।   उत्तर : पेंसिल

3. पेट कटे मीठा फल खाओ,
   शीश कटे रघुवर गुण गाओ,
   पैर कटे तो काट गिराउ
   बच्चों मेरा नाम बताओ।   उत्तर : आराम

4. काली–काली माँ,
   लाल–लाल बच्चे,
   जिधर जाये माँ,
   उधर जाये बच्चे।

वाक्यांश और अभिव्यक्तियों

In English	हिन्दी में
Above mentioned	उपर्युक्त
A brief summary of the case is placed blow	मामले का सारांश नीचे रखा है
Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
Accord approval to...	कृपया... को अनुमोदित करें,
Acknowledgement of receipt	प्राप्ति सूचना
Acting in official capacity	पद की हैसियत से कार्य करते हुए
Action is underway	कार्रवाई की जा रही है
Admissibility of claim	दावे की स्वीकार्यता
After consultation with	से परामर्श करके
As proposed	यथा प्रस्तावित
Bill of payment	भुगतान बिल
Certificate by the competent authority is required	सक्षम प्राधिकारी का प्रमाणपत्र अपेक्षित है
Come into force	लागू होना
Delegation of financial powers	वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
Draft, as amended, may be issued	यथासंशोधित मसौदाध्प्रारूप जारी किया जाए
Draft for approval	अनुमोदनार्थ प्रारूप, अनुमोदनार्थ मसौदों
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी, कार्योत्तर संस्वीकृति
For approval	अनुमोदनार्थ, अनुमोदन के लिए
For ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए
I am directed to state that	मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि
In accordance with	के अनुसार
In pursuance of	के अनुसरण में, के अनुसार
It has been noticed that	यह देखा गया है कि
Last pay certificate (L.P.C.)	अंतिम वेतन प्रमाणपत्र
Leave travel concession	छुट्टी यात्रा रियायत
May be approved	अनुमोदित किया जाए
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास करें
No claim certificate	अदावा प्रमाणपत्र
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण-पत्र, अनापत्ति पत्र
Notice in writing	लिखित सूचना
Not payable before	के पूर्व अदेय
On behalf of	की ओर से
On deputation	प्रतिनियुक्ति पर
On probation	परिवीक्षाधीन
Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए

ऑडिट दिवस 2023 समापन समारोह की कुछ झलकियां

हिंदी पखवाड़ा 2023 की कुछ झलकियां